नव भारत भोपाल, बुधवार, 15 फरवरी, 2017

वैदिक परंपरा को संरक्षित करने की जरूरत : भट्ट

91वीं इंडियन फिलोसॉफी कांग्रेस का समापन

भोपाल, 14 फरवरी, नभासं. सांची विश्वविद्यालय में चल रही तीन दिवसीय कार्यक्रम 91वीं इंडियन फिलोसॉफी कांग्रेस का मंगलवार को समापन हो गया.

कार्यक्रम में एशियाई दर्शन कांग्रेस के चेयरमैन प्रो. एस आर भट्ट ने दर्शन को नए विचार और कारण की जरूरत बताते हुए नई पीढ़ी से शोध को आगे बढ़ाने की अपील की एवं भारतीय दर्शन की वैदिक परंपरा को संरक्षित, प्रचारित और फैलाने की जरूरत पर जोर दिया.

एशियाई फिलोसॉफी कांग्रेस के महासचिव प्रो. बालगणपति ने कहा कि भारत के विश्वविद्यालयों में दर्शन विभाग बंद हो रहे हैं और ऐसे में जरूरत है कि समाज दर्शन

दर्शन की दिशा में कार्य करने की जरूरत पर जोर

की जरूरत के मुताबिक कार्य हो. उन्होंने युवाओं में दर्शन के प्रति लगाव बढ़ाने की दिशा में काम करने पर जोर दिया.

इंडियन फिलोसॉफी कांग्रेस के महासचिव प्रो. पनीरसेल्वम ने कहा कि इस कांग्रेस में पिछले 5 साल से दो धड़ों में बंटी इंडियन फिलोसॉफी कांग्रेस फिर से एकसाथ आई है और ये भारत में दर्शन के लिए अच्छा कदम है.

अंतर्राष्ट्रीय स्तर के चिंतकों का जमावड़ा

कार्यक्रम में तकनीकी सत्रों में तत्वमीमांसा और ज्ञानमीमांसा, तर्कशास्त्र और वैज्ञानिक विधि, आचार और सामाजिक दर्शन एवं धर्म पर 32 शोध-पत्र पढ़े गए. कांग्रेस के दौरान करीब 193 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए. एशियाई फिलोसॉफिकल कांफ्रेस में 12 देशों के दर्शनशास्त्रियों समेत देशभर के दार्शनिक, चिंतक एवं विचारक एकसाथ जुटे.

सामाजिक विज्ञान एक साथ आएं : प्रो. जमखेडकर

सांची विवि के कुलपति आचार्य प्रो. यज्ञेश्वर शास्त्री ने समारोह में पधारे सभी अतिथियों द्वारा प्रस्तुत शोध-पत्रों एवं विचार मंथन को अभूतपूर्व बताते हुए समारोह को अकादमिक रूप. से ऐतिहासिक करार दिया. समापन समारोह में मुख्य वक्तव्य देते हुए डेक्कन कॉलेज पुणे के चांसलर प्रो. जमखेडकर ने दर्शन समेत सभी सामाजिक विज्ञान को एक साथ आने की जरूरत बताई. उन्होंने सांची विवि से भविष्य में एक सम्मेलन कर सभी सामाजिक विज्ञानों की मूलभूत चीजों पर विस्तृत विचार करने का आग्रह किया.

FREE PRESS Wednesday / Bhopal February 15, 2017

Youngsters urged to preserve tradition of Vedic philosophy

Conference at Sanchi varsity on Asian philosophies concludes

• OUR STAFF REPORTER
BHOPAL

Asian Philosophy Conference conclude at Sanchi University of Buddhist-Indic Studies on Tuesday

The 91st Indian Philosophy Congress concluded at Sanchi University for Buddhist-Indic Studies on Tuesday. Asian Philosophy Congress, chairman, Prof SR Bhatt in his address urged the young generation to emphasise on research and take new philosophical thoughts forward.

He stressed on conserving Vedic traditions of Indian philosophy and also to do its publicity and expansion.

General secretary Prof Balganpati said there is a need to work in the field of philosophy considering the demands of society. The university's vice chancellor Prof Yageshwar Shastri termed the programme as historic and unprecedented.

Key speaker during concluding session, Deccan College, Pune, chancellor, Prof Jamkhedkar said all social sciences should come on one platform. He also spoke on spread of Vaishnav religion.

राष्ट्रीय हिन्दी मेल भोपाल, बुधवार, 15 फरवरी 2017

युवाओं को बताया जाए दर्शनशास्त्र का महत्व

दर्शन को प्रासंगिक बनाने के लिए समाज से जोड़ने की आवश्यकता

[illegible]

Central Chronicle Wednesday, February 15, 2017

Vedic tradition should be conserved and popularized: Prof Bhatt

Staff Reporter, Bhopal

The three-day 91st Indian Philosophy Congress at the Sanchi University concluded on Tuesday. Asian Philosophy Congress chairman Prof. SR Bhatt stressed the need to conserve and popularize the Vedic tradition of Indian philosophy.

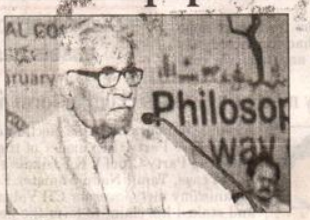

Asian Philosophy Congress general secretary Prof. Balganpati said the departments of philosophy in Indian universities are shutting down. He stressed the need to rekindle interest for philosophy among youths.

Sanchi University vice chancellor Prof. Yagyeshwar Shastri the three-day function was academically historic. Deccan College Pune's chancellor Prof. Jamkhedkar said all the social science subjects and philosophy should come on one platform.

16 नवदुनिया भोपाल, बुधवार 15 फरवरी 2017

युवाओं में दर्शन के प्रति पैदा करना होगा लगाव

भोपाल

भारत के विश्वविद्यालयों में दर्शन विभाग बंद हो रहे हैं। युवाओं में दर्शन के प्रति लगाव बढ़ाने की दिशा में काम करने की जरूरत है। समाज में दर्शन की जरूरत के मुताबिक काम किए जाने की आवश्यकता है। इससे दर्शन शास्त्र को जीवित रखा जा सकता है।

यह विचार सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में तीन दिन से जारी 91वीं इंडियन फिलॉसफी कांग्रेस के समापन अवसर पर विशेषज्ञों ने व्यक्त किए। प्रोफेसर पनीरसेल्वम ने कहा कि दयाकृष्ण चिंतन के दो भाग हैं। एक वो जिसमें वह भारतीय दर्शन की पूर्व मान्यताएं जैसे आध्यात्मिकता को चुनौती देते हैं दूसरा वह जिसमें वह वेद के प्रमाण होने का भी खंडन करते हुए भारतीय दर्शन को धर्म या परलोक शास्त्र से हटाकन दर्शन के रूप में स्थापित करते हैं। प्रोफेसर बालगणपति ने कहा कि दर्शन के प्रति रुचि जगाना जरूरी है। विश्वविद्यालयों में दर्शन पर शोध कार्य होने चाहिए, लेकिन दर्शन विभाग बंद होने से ऐसा हो नहीं पा रहा है, जो चिंता का विषय है। इसी के साथ सेमिनार का सममापन हो गया।

सांची विश्वविद्यालय में आयोजित कान्फ्रेंस के समापन पर विशेषज्ञों ने अपने विचार व्यक्त किए।

भोपाल ■ सोमवार, 13 फरवरी 2017 सुबह सवेरे

आयोजन

सांची बौद्ध-भारतीय अध्ययन विश्वविद्यालय में 91वी इंडियन फिलोसॉफी कांग्रेस शुरु

दर्शन और विज्ञान को परस्पर पूरक समझकर कार्य करने का समय

सुबह सवेरे, भोपाल

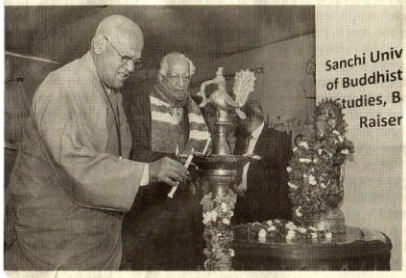

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में 91वीं भारती दर्शन कॉंग्रेस का शुभारंभ मशहूर स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी और दार्शनिक प्रो रामजी सिंह ने किया। इस मौके पर प्रो सिंह ने कहा कि दर्शन का लक्ष्य अध्यात्मिकता और व्यावहारिक प्रयोजन होना चाहिए। उन्होंने कहा कि वक्त आ गया है कि हम दर्शन और विज्ञान को पूरक की तरह समझकर कार्य करें क्योंकि बिना दर्शन के विज्ञान अंधा है और विज्ञान के बिना दर्शन अपंग। उन्होंने कांग्रेस में मौजूद विद्वानों से वैश्विक दर्शन विकसित करने का आव्हान किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाबोधि सोसायटी ऑफ श्रीलंका के प्रमुख बनागला उपतिस्स नायक थैरो थे। उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष और इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस के महासचिव प्रो डी. एन. द्विवेदी ने कहा कि भारतीय संदर्भ में ज्ञान प्रज्ञा है। उन्होंने कहा कि ज्ञान प्राप्ति के लिए कोई विचार मान्य तो किया जा सकता है लेकिन उसे ज्ञान नहीं समझना चाहिए क्योंकि विचार गलत भी हो सकता है।

उद्घाटन सत्र में प्रारंभिक वक्तव्य देते हुए सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य प्रो. यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि समस्त मनुष्य जाति एक परिवार है और वेदों के अनुसार सत्य एक ही है जिसे विद्वान अलग-अलग ढंग से वर्णित करते हैं। बौद्धिक संकल्पनाओं के विश्लेषण के उलट उन्होने दर्शन का व्यावहारिक प्रयोजन मानव दुखों का निवारण बताया। प्रो शास्त्री ने कहा कि सच्चे दार्शनिक लोगों के जीवन में ज्ञान का प्रकाश और दुख से मुक्ति की कोशिश करते हैं।

उद्घाटन सत्र में विशेष वक्तव्य देते हुए भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के चेयरमैन प्रो. एसआर भट्ट ने भारतीय दर्शन को अन्तः प्रज्ञा से युक्त होने के साथ तार्किक भी बताया जो अन्वीक्षा, परीक्षा और समीक्षा से अपनी राह तय करता है। उन्होंने उपस्थित विद्वजनों से दर्शन का इतिहास पढ़ाने की बजाय उसे जीवनोपयोगी बताते हुए मौजूदा समय में पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता जताई। उन्होंने कहा कि ज्ञान के कई वैकल्पिक मार्ग हो सकते है और प्राचीन ग्रंथों में 54 प्रकार बताए गए हैं। प्रो. भट्ट ने जैन धर्म में पर्यायवाद के सिद्धांत को मौजूदा वक्त में बेहद उपयोगी मानते हुए कहा कि पर्यायवाद विज्ञान के संभावनावाद का बेहतर रुप है जो बताता है कि एक अनेक कैसे हो जाता है।

इंडियन फिलोसॉफी कांग्रेस के इंडोमेंट लेक्चर के बुद्ध सीरीज पर बोलते हुए प्रो. प्रदीप गोखले ने कहा कि समाज की उपयोगिता लोगों के दुखों को दूर करने में है। उन्होनें कहा कि अंबेडकर ने कर्म सिद्धांत से पुनर्जन्म के सिद्धांत को हटा दिया था। स्त्रीवाद पर बोलते हुए प्रो श्रीकला नैयर ने कहा कि महिलाओं का सत्य के प्रति आग्रह कुछ अलग और अधिक होता है। डॉ एस कृष्णन ने आचार्य तुलसी लेक्चर में बोलते हुए कहा कि शैव सिद्धांत इतिहास काल के पूर्व का दर्शन है जिसमें शिव नैतिक नियम का संचालक है। उन्होने कर्म सिंद्धांत में ईश्वर को संचालक माना।

लेक्चर सीरीज के बाद हुए तकनीकी सत्र में पांच अलग-अलग विषयों यथा- दर्शन का इतिहास, तत्वमीमांसा और ज्ञानमीमांसा, आचार और सामाजिक दर्शन एवं धर्म पर 39 शोध-पत्र पढ़े गए। दिन के अंतिम सत्र में मौजूदा परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन पर सिंपोसियम में दर्शन के विभिन्न विद्वानों एवं चिंतकों ने अपने विचार व्यक्त किए।

आयोजन | सांची विश्वविद्यालय में 91वीं इंडियन फिलोसफी कांग्रेस हुई शुरू, स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी और दार्शनिक प्रो. रामजी सिंह ने किया शुभारंभ

विश्व को भारत से उम्मीद, वैश्विक दर्शन विकसित करने की जरूरत

हरिभूमि न्यूज. भोपाल

रविवार को सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में 91वीं भारती दर्शन कांग्रेस का शुभारंभ मशहूर स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी और दार्शनिक प्रो. रामजी सिंह ने किया। इस मौके पर प्रो. सिंह ने कहा कि दर्शन का लक्ष्य अध्यात्मिकता और व्यावहारिक प्रयोजन होना चाहिए।

उन्होंने कहा कि वक्त आ गया है कि हम दर्शन और विज्ञान को पूरक की तरह समझकर कार्य करें। क्योंकि बिना दर्शन के विज्ञान अंधा है और विज्ञान के बिना दर्शन अपंग। उन्होंने कांग्रेस में मौजूद विद्वानों से वैश्विक दर्शन विकसित करने का आव्हान किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाबोधि सोसायटी ऑफ

श्रीलंका के प्रमुख बनागला उपतिस्स नायक थैरो रहे। उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष और इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस के महासचिव प्रो. डी. एन. द्विवेदी ने कहा कि भारतीय संदर्भ में ज्ञान प्रज्ञा है। ज्ञान प्राप्ति के लिए कोई विचार मान्य तो किया जा सकता है, लेकिन उसे ज्ञान नहीं समझना चाहिए, क्योंकि विचार गलत भी हो सकता है।

सभी मनुष्य जाति एक परिवार

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य प्रो. यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि सभी मनुष्य जाति एक परिवार है और वेदों के अनुसार सत्य एक ही है, जिसे विद्वान अलग-अलग ढंग से वर्णित करते हैं। बौद्धिक संकल्पनाओं के विश्लेषण के उलट उन्होंने दर्शन का व्यावहारिक प्रयोजन मानव दुखों का निवारण बताया। प्रो. शास्त्री ने कहा कि सच्चे दार्शनिक लोगों के जीवन में ज्ञान का प्रकाश और दुख से मुक्ति की कोशिश करते हैं। विशेष वक्तव्य देते हुए भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के चेयरमैन प्रो. एसआर भट्ट ने भारतीय दर्शन को अन्तः प्रज्ञा से युक्त होने के साथ तार्किक भी बताया जो अन्वीक्षा, परीक्षा और समीक्षा से अपनी राह तय करता है। उन्होंने उपस्थित विद्वजनों से दर्शन का इतिहास पढ़ाने की बजाय उसे जीवनोपयोगी बताते हुए मौजूदा समय में पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता जताई। इंडियन फिलोसॉफी कांग्रेस के इंडोमेंट लेक्चर के बुद्ध सीरीज पर बोलते हुए प्रो. प्रदीप गोखले ने कहा कि समाज की उपयोगिता लोगों के दुखों को दूर करने में है।

सांची विवि में एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ

मप्र में पहली बार आयोजन आज होगी इंडियन फिलोसॉफिकल कांफेंस की शुरुआत

समय जगत संवाददाता, भोपाल

मप्र में पहली बार आयोजित एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विवि में हुआ। मप्र के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री सुरेंद्र पटवा ने कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन करते हुए कहा कि वैदिक एवं बौद्ध परंपराएं एशियाई और विश्व एकता के लिए आदर्श है। उन्होने कहा कि मौजूदा दौर में भारतीय दर्शन के तत्वों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। श्री पटवा ने एशियाई फिलोसॉफिकल कॉन्फ्रेंस से मिलने वाले बिंदुओं को क्रियान्वित कराने में संस्कृति मंत्रालय की मदद का आश्वासन भी दिया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्रीलंकाई महाबोधि

सोसायटी के बनागला उपतिस्स नायक थैरो ने कहा कि पश्चिमी दर्शन बहस करने की चीज है जबकि पूर्वी दर्शन व्यवहार में उतारने की। श्री थैरो ने कहा कि प्रवासी दिवस की शुरुआत सर्वप्रथम सांची से ही हुई थी और सांची ने ही एशिया को एक नया दर्शन और जीवन व्यवहार दिया। एशियाई फिलोसॉफी कांग्रेस के चेयरमैन प्रो. एसआर भट्ट ने उद्घाटन सत्र में कहा कि पश्चिमी दर्शन में बुद्धि पर जोर होता है जबकि पूर्वी दर्शन में बुद्धि के साथ जीवन जीने और जीवनस्तर को ऊंचा उठाने पर खासा ध्यान दिया जाता है। उन्होने कहा कि भारतीय दर्शन विश्वमानव की अवधारणा पर कार्य करता है जो मौजूदा दौर में और भी ज्यादा प्रासंगिक हो गया है। उद्घाटन वक्तव्य देते हुए सांची विवि के कुलपति आचार्य प्रो. यज्ञश्वर शास्त्री ने कहा कि एशियाई कॉन्फ्रेंस के जरिये सांची विवि दर्शन विश्व को अपनी गंभीरता और दर्शन के प्रति निष्ठा बताना चाहता है। उन्होने कहा कि सांची विवि वैदिक एवं बौद्ध दर्शन के सूत्रों को एकीकृत करने भारतीय दर्शन को मौजूदा परिप्रेक्ष्य में पुनः परिभाषित करने और नए ज्ञान के सृजन के प्रति प्रतिबद्ध है। एशियाई पहचान के सर्वसम्मत सिद्धांतों को प्रतिपादित करने और अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले दार्शनिकों का एक वैश्विक मंच तैयार करने के उद्देश्य से हो रही एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस के मुख्य सत्र में एशियाई परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण प्रबंधन के माध्यम से शांति कायम रखने में प्रौद्योगिकी की भूमिका पर विचार हुआ।

दर्शन पर मंथन | सांची बौद्ध-भारतीय अध्ययन विश्वविद्यालय में 91वी इंडियन फिलोसॉफी कांफ्रेंस शुरू, वैश्विक दर्शन विकसित करने का आह्वान

दर्शन के बिना विज्ञान अंधा और विज्ञान के बिना दर्शन अपंग : प्रो. रामजी

भास्कर संवाददाता | रायसेन

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में 91 वीं भारती दर्शन कांग्रेस का शुभारंभ मशहूर स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी और दार्शनिक प्रो. रामजी सिंह ने किया। इस मौके पर प्रो. सिंह ने कहा कि दर्शन का लक्ष्य आध्यात्मिकता और व्यावहारिक प्रयोजन होना चाहिए। अब वक्त आ गया है कि हम दर्शन और विज्ञान को पूरक की तरह समझकर कार्य करें, क्योंकि बिना दर्शन के विज्ञान अंधा है और विज्ञान के बिना दर्शन अपंग। उन्होंने कार्यक्रम में मौजूद विद्वानों से वैश्विक दर्शन विकसित करने का आव्हान किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाबोधि सोसायटी ऑफ श्रीलंका के बनागला उपतिस्स नायक थैरो थे। उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष और इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस के महासचिव प्रो. डीएन द्विवेदी ने कहा कि भारतीय संदर्भ में ज्ञान प्रज्ञा है। ज्ञान प्राप्ति के लिए कोई विचार मान्य तो किया जा सकता है, लेकिन उसे ज्ञान नहीं समझना चाहिए क्योंकि विचार गलत भी हो सकता है।

वेदों को विद्वान अलग-अलग ढंग से करते है वर्णित

बौद्ध विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य प्रो. यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि समस्त मनुष्य जाति एक परिवार है और वेदों के अनुसार सत्य एक ही है जिसे विद्वान अलग-अलग ढंग से वर्णित करते हैं। भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के चेयरमैन प्रो एसआर भट्ट ने भारतीय दर्शन को अन्तः प्रज्ञा से युक्त होने के साथ तार्किक भी बताया।

सत्य के प्रति महिलाओं का आग्रह अलग होता है

स्त्री वाद पर प्रो. श्रीकला नैयर ने कहा कि महिलाओं का सत्य के प्रति आग्रह कुछ अलग और अधिक होता है। डॉ. एस कृष्णन ने शैव सिद्धांत इतिहास काल के पूर्व का दर्शन है जिसमें शिव नैतिक नियम का संचालक है। उन्होंने कर्म सिद्धांत में ईश्वर को संचालक माना। प्रो. प्रदीप गोखले ने कहा कि समाज की उपयोगिता लोगों के दुखों को दूर करने में है।

आज गांधीवादी दर्शन पर होगा मंथन, 34 शोध पत्र पढ़े जाएंगे

13 फरवरी को इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस की बैठक में इंडोमेंट लेक्चर सीरीज में गांधी दर्शन, वेदांत एवं मानवत्वाद पर विद्वानों के विचार होंगे। साथ ही तकनीकी सत्र में दर्शन का इतिहास, तत्व मीमांसा और ज्ञान मीमांसा, आचार और सामाजिक दर्शन एवं धर्म पर 34 शोध पत्र पढ़े जाएंगे। इसके उपरांत इच्छामृत्यु विषय पर सिंपोजियम में विद्वान अपने विचार रखेंगे। 14 फरवरी को इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस का समापन होगा।

भारती दर्शन कांग्रेस...
पत्रिका दिनां 13/2

'वैश्विक दर्शन विकसित करने की आवश्यकता'

रायसेन. कान्फ्रेंस में पहुंचे चिंतक।

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

रायसेन. सांची बौद्ध.भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में 91वीं भारतीय दर्शन कांग्रेस का शुभारंभ मशहूर स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी और दार्शनिक प्रो रामजी सिंह ने किया। इस मौके पर प्रो सिंह ने कहा कि दर्शन का लक्ष्य अध्यात्मिकता और व्यावहारिक प्रयोजन होना चाहिए। उन्होंने कहा कि वक्त आ गया है कि हम दर्शन और विज्ञान को पूरक की तरह समझकर कार्य करें। क्योंकि बिना दर्शन के विज्ञान अंधा है और विज्ञान के बिना दर्शन अपंग। उन्होंने कांग्रेस में मौजूद विद्वानों से वैश्विक दर्शन विकसित करने का आव्हान किया। कार्यक्र म के मुख्य अतिथि महाबोधि सोसायटी ऑफ श्रीलंका के प्रमुख बनागला उपतिस्स नायक थैरो थे। उदघाटन समारोह के अध्यक्ष और इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस के महासचिव प्रो. डीएन द्विवेदी ने कहा कि भारतीय संदर्भ में ज्ञान प्रज्ञा है। उन्होंने कहा कि ज्ञान प्राप्ति के लिए कोई विचार मान्य तो किया जा सकता है, लेकिन उसे ज्ञान नहीं समझना चाहिए क्योंकि विचार गलत भी हो सकता है। सांची बौद्ध, भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य प्रो यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि समस्त मनुष्य जाति एक परिवार है और वेदों के अनुसार सत्य एक ही है जिसे विद्वान अलग-अलग ढंग से वर्णित करते हैं। बौद्धिक संकल्पनाओं के विश्लेषण के उलट उन्होंने दर्शन का व्यावहारिक प्रयोजन मानव दुखों का निवारण बताया। प्रो शास्त्री ने कहा कि सच्चे दार्शनिक लोगों के जीवन में ज्ञान का प्रकाश और दुख से मुक्ति की कोशिश करते हैं।

विशेष वक्तव्य देते हुए भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के चेयरमैन प्रो एसआर भट्ट ने भारतीय दर्शन को अन्तः प्रज्ञा से युक्त होने के साथ तार्किक भी बताया जो अन्वीक्षा, परीक्षा और समीक्षा से अपनी राह तय करता है। उन्होंने उपस्थित विद्वजनों से दर्शन का इतिहास पढ़ाने की बजाय उसे जीवनोपयोगी बताते हुए मौजूदा समय में पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता जताई। उन्होंने कहा कि ज्ञान के कई वैकल्पिक मार्ग हो सकते हैं। प्राचीन ग्रंथों में 54 प्रकार बताए गए हैं। प्रो. भट्ट ने जैन धर्म में पर्यायवाद के सिद्धांत को मौजूदा वक्त में उपयोगी मानते हुए कहा कि पर्यायवाद विज्ञान के संभावनावाद का बेहतर रूप है जो बताता है कि एक अनेक कैसे हो जाता है।

पत्रिका Bhopal . Monday 13/02/2017
ive 14 spectrum 15 screen play 16 patrika.com/entertainment

EVENT...

दर्शन का लक्ष्य हो आध्यात्मिकता

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

भोपाल ■ सांची बौद्ध विवि में 91वीं भारती दर्शन कांग्रेस का शुभारंभ स्वतंत्रता सेनानी गांधीवादी और दार्शनिक प्रो रामजी सिंह ने किया। इस मौके पर प्रो सिंह ने कहा कि दर्शन का लक्ष्य अध्यात्मिकता और व्यावहारिक प्रयोजन होना चाहिए। उन्होंने कहा कि वक्त आ गया है कि हम दर्शन और विज्ञान को पूरक की तरह समझकर कार्य करें। साथ कॉन्फ्रेंस में मौजूद विद्वानों से वैश्विक दर्शन विकसित करने का आव्हान किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाबोधि सोसायटी ऑफ श्रीलंका के प्रमुख बनागला उपतिस्स नायक थैरो थे। उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष और इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस के महासचिव प्रो डीएन द्विवेदी ने कहा कि प्राप्ति के लिए कोई विचार मान्य तो किया जा सकता है, लेकिन उसे ज्ञान नहीं समझना चाहिए क्योंकि विचार गलत भी हो सकता है।

पुनर्जन्म सिद्धांत को हटाया गया : इंडियन फिलोसॉफी कांग्रेस के इंडोमेंट लेक्चर के बुद्ध सीरीज पर बोलते हुए प्रो प्रदीप गोखले ने कहा कि समाज की उपयोगिता लोगों के दुखों को दूर करने में है। उन्होंने कहा कि अंबेडकर ने कर्म सिद्धांत से पुनर्जन्म के सिद्धांत को हटा दिया था। प्रो श्रीकला नैयर ने कहा कि महिलाओं का सत्य के प्रति आग्रह कुछ अलग और अधिक होता है।

नव भारत भोपाल, सोमवार, 13 फरवरी, 2017

दर्शन के बिना विज्ञान अंधा और विज्ञान के बिना दर्शन अपंग : प्रो . रामजी सिंह

तत्वमीमांसा और ज्ञानमीमांसा जैसे विषयों पर पढ़ गए शोधपत्र

भोपाल, 12 फरवरी, नभासं. सांची विश्वविद्यालय में 91वीं भारती दर्शन कॉग्रेस का शुभारंभ मशहूर स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी और दार्शनिक प्रो. रामजी सिंह ने रविवार को किया.

प्रो. सिंह ने कहा कि दर्शन का लक्ष्य अध्यात्मिकता और व्यावहारिक प्रयोजन होना चाहिए. प्रो. सिंह ने कहा कि वक्त आ गया है कि हम दर्शन और विज्ञान को पूरक की तरह समझकर कार्य करें क्योंकि बिना दर्शन के विज्ञान अंधा है और विज्ञान के बिना दर्शन अपंग. प्रो. सिंह ने कांग्रेस में मौजूद विद्वानों से वैश्विक दर्शन विकसित करने का आव्हान किया. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाबोधि सोसायटी ऑफ श्रीलंका

91 वीं दर्शन कांग्रेस सांची विवि में

के प्रमुख बनागला उपतिस्स नायक थैरो थे. उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष और इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस के महासचिव प्रो. डीएन द्विवेदी ने कहा कि भारतीय संदर्भ में ज्ञान प्रज्ञा है. ज्ञान प्राप्ति के लिए कोई विचार मान्य तो किया जा सकता है लेकिन उसे ज्ञान नहीं समझना चाहिए, क्योंकि विचार गलत भी हो सकता है.

राष्ट्रीय हिन्दी मेल भोपाल, सोमवार, 13 फरवरी 20

सांची बौद्ध भारतीय अध्ययन विवि में 91वी इंडियन फिलोसॉफी कांग्रेस शुरु

रायसेन, 12 फरवरी (निप्र)। सांची बौद्ध.भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में 91वीं भारती दर्शन कॉग्रेस का शुभारंभ मशहूर स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी और दार्शनिक प्रो रामजी सिंह ने किया। इस मौके पर प्रो सिंह ने कहा कि दर्शन का लक्ष्य अध्यात्मिकता और व्यावहारिक प्रयोजन होना चाहिए।

उन्होने कहा कि वक्त आ गया है कि हम दर्शन और विज्ञान को पूरक की तरह समझकर कार्य करें क्योंकि बिना दर्शन के विज्ञान अंधा है और विज्ञान के बिना दर्शन अपंग। उन्होने कांग्रेस में मौजूद विद्वानों से वैश्विक दर्शन विकसित करने का आव्हान किया। कार्य म के मुख्य अतिथि महाबोधि सोसायटी ऑफ श्रीलंका के प्रमुख बनागला उपतिस्स नायक थैरो थे। उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष और इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस के महासचिव प्रो डी.एन. लिए कोई विचार मान्य तो किया जा सकता है लेकिन उसे ज्ञान नहीं समझना चाहिए क्योंकि विचार गलत भी हो सकता है। उद्घाटन सत्र में प्रारंभिक वक्त व्य देते हुए सांची बौद्ध.भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य प्रो यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि समस्त मनुष्य जाति एक परिवार है और वेदों के अनुसार सत्य एक ही है।

अर्चना चिटनिस का दौरा

महिला बाल-विकास मंत्री श्रीमती अर्चना चिटनिस 13 फरवरी को बुरहानपुर प्रवास पर रहेंगी। श्रीमती चिटनिस सुबह द्वारकापुरी तथा 9.30 बजे ग्राम नागोनी और इच्छापुर में नागरिकों से भेंट करेंगी।

भोजपाल
स्वदेश भोपाल, 13 फरवरी 2017 . 12

आयोजन } सांची बौद्ध-भारतीय अध्ययन विवि में भारतीय दर्शन पर सम्मेलन शुरू

बिना दर्शन के विज्ञान अधूरा : प्रो.सिंह

« स्वदेश संवाददाता। भोपाल

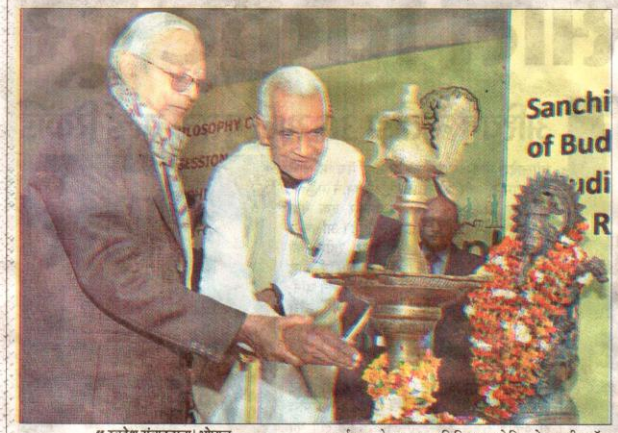

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में 91वीं भारती दर्शन कॉग्रेस का शुभारंभ मशहूर स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी और दार्शनिक प्रो रामजी सिंह ने किया। इस मौके पर प्रो सिंह ने कहा कि दर्शन का लक्ष्य अध्यात्मिकता और व्यावहारिक प्रयोजन होना चाहिए। उन्होने कहा कि वक्त आ गया है कि हम दर्शन और विज्ञान को पूरक की तरह समझकर कार्य करें क्योंकि बिना दर्शन के विज्ञान अंधा है और विज्ञान के बिना दर्शन अपंग। उन्होने कांग्रेस में मौजूद विद्वानों से वैश्विक दर्शन विकसित करने का आव्हान किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाबोधि सोसायटी ऑफ श्रीलंका के प्रमुख बनागला उपतिस्स नायक थैरो थे। उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष और इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस के महासचिव प्रो डी. एन. द्विवेदी ने कहा कि भारतीय संदर्भ में ज्ञान प्रज्ञा है। उन्होने कहा कि ज्ञान प्राप्ति के लिए कोई विचार मान्य तो किया जा सकता है लेकिन उसे ज्ञान नहीं समझना चाहिए क्योंकि विचार गलत भी हो सकता है। प्रारंभिक वक्तव्य देते हुए सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य प्रो यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि समस्त मनुष्य जाति एक परिवार है और वेदों के अनुसार सत्य एक ही है जिसे विद्वान अलग-अलग ढंग से वर्णित करते हैं। बौद्धिक संकल्पनाओं के विश्लेषण के उलट उन्होने दर्शन का व्यावहारिक प्रयोजन मानव दुखों का निवारण बताया। प्रो शास्त्री ने कहा कि सच्चे दार्शनिक लोगों के जीवन में ज्ञान का प्रकाश और दुख से मुक्ति की कोशिश करते हैं।

दर्शन को पुनर्स्थापित करना होगा : प्रो.भट्ट

उद्घाटन सत्र में विशेष वक्तव्य देते हुए भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के चेयरमैन प्रो एस आर भट्ट ने भारतीय दर्शन को अन्तः प्रज्ञा से युक्त होने के साथ तार्किक भी बताया जो अन्वीक्षा, परीक्षा और समीक्षा से अपनी राह तय करता है। उन्होने उपस्थित विद्वजनों से दर्शन का इतिहास पढ़ाने की बजाय उसे जीवनोपयोगी बताते हुए मौजूदा समय में पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता जताई। उन्होने कहा कि ज्ञान के कई वैकल्पिक मार्ग हो सकते है और प्राचीन ग्रंथों में 54 प्रकार बताए गए हैं। प्रो भट्ट ने जैन धर्म में पर्यायवाद के सिद्धांत को मौजूदा वक्त में बेहद उपयोगी मानते हुए कहा कि पर्यायवाद विज्ञान के संभावनावाद का बेहतर रुप है जो बताता है कि एक अनेक कैसे हो जाता है। इंडोमेंट लेक्चर के बुद्ध सीरीज पर बोलते हुए प्रो प्रदीप गोखले ने कहा कि समाज की उपयोगिता लोगों के दुखों को दूर करने में है। उन्होने कहा कि अंबेडकर ने कर्म सिद्धांत से पुनर्जन्म के सिद्धांत को हटा दिया था। स्त्रीवाद पर बोलते हुए प्रो श्रीकला नैयर ने कहा कि महिलाओं का सत्य के प्रति आग्रह कुछ अलग और अधिक होता है। डॉ एस कृष्णन ने आचार्य तुलसी लेक्चर में बोलते हुए कहा कि शैव सिद्धांत इतिहास काल के पूर्व का दर्शन है जिसमें शिव नैतिक नियम का संचालक है।

राष्ट्रीय हिन्दी मेल भोपाल, मंगलवार, 14 फरवरी 2017

91वीं इंडियन फिलॉसफी कांग्रेस के दूसरे दिन कई अहम विषयों पर चर्चा

सामाजिक समरसता हेतु शिक्षा और आपसी सामंजस्य अहम, दर्शन पुनर्लेखन पर बनी सहमति

निज संवाददाता

रायसेन, 13 फरवरी। सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आयोजित 91वीं भारती दर्शन कॉंग्रेस के दूसरे दिन सामाजिक रुप से पिछड़े लोगों के उत्थान में अफर्मेटिव एक्शन पर सिंपोसियम में कई रचनात्मक विचार सामने आए।

शिवानंद आश्रम एमदाबाद के स्वामी अध्यात्मानंदजी ने कहा कि घावों की हीलिंग और समाज द्वारा पिछड़े लोगों की मदद, और एकीकरण से ही लोगों का भला होगा। उन्होंने खाई पाटने वाले ऐसे दार्शनिकों की आवश्यकता गिनाई जो समाज में एकीकरण को बढ़ा सकें। उन्होंने अनिवार्य निशुल्क शिक्षा को समाधान बताया।

प्रो नितिन व्यास ने कहा कि सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन से न्याय की स्थापना होगी। प्रो बीपी शर्मा ने कहा कि उपनिषद की शिक्षा शाब्दिक बनकर रह गई क्योंकि जाति व्यवस्था जन्म आधारित व्यवस्था बन गई। श्रीलंका से आए प्रो दया इदिरिसिंघे ने कहा कि उनके देश में शिक्षा मुफ्त है और सरकार द्वारा ही दी जाती है। सिंघली एवं तमिल भाषाओं को समान रुप से, बढ़ावा देने के कारण श्रीलंका में सामाजिक समरसता है। उन्होंने कहा कि उनके देश में जाति का उल्लेख किसी भी नौकरी के आवेदन में आवश्यक नहीं है और इससे समरसता बढ़ाने में मदद मिली है।

लेक्चर सीरीज के बाद हुए तकनीकी सत्र में पांच अलग-अलग विषयों यथा- दर्शन का इतिहास, तत्वमीमांसा और ज्ञानमीमांसा, आचार और सामाजिक दर्शन, अध्यात्म एवं विज्ञान एवं धर्म पर 34 शोध-पत्र पढ़े गए। दिन के अंतिम सत्र में इच्छामृत्यु विषय पर सिंपोसियम में विचारकों एवं चिंतकों ने अपने विचार व्यक्त किए।

14 फरवरी को इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस की बैठक में इंडोमैंड लेक्चर सीरीज में सांस्कृतिक एवं धार्मिक समझ पर प्रो गणेश प्रसाद दास लेक्चर होगा। इसी कड़ी में दया कृष्ण मेमोरियल लेक्चर एवं के एस मूर्ति मेमोरियल लेक्चर भी होगा। तकनीकी सत्रों में तत्वमीमांसा और ज्ञानमीमांसा, आचार और सामाजिक दर्शन एवं धर्म पर 32 शोध-पत्र पढ़े जाएंगे।

---

18 नवदुनिया भोपाल, मंगलवार 14 फरवरी 2017

समाज को खाई पाटने वाले दार्शनिकों की जरूरत

सांची विवि में दर्शन कॉन्फ्रेंस में विशेषज्ञों ने रखे अपने विचार

भोपाल

समाज को खाई पाटने वाले ऐसे दार्शनिकों की आवश्यकता है, जो समाज में एकीकरण को बढ़ा सकें। समाज के पिछड़े लोगों की मदद व एकीकरण से ही लोगों का भला होगा। यही दर्शन का मकसद है। यह विचार सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में जारी 91वीं भारती दर्शन कांग्रेस के दूसरे दिन विशेषज्ञों ने व्यक्त किए। शिवानंद आश्रम अहमदाबाद के स्वामी अध्यात्मानंदजी ने कहा कि सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन से न्याय की स्थापना होगी। प्रोफेसर बीपी शर्मा ने कहा कि उपनिषद की शिक्षा शाब्दिक बनकर रह गई है, क्योंकि जाति व्यवस्था जन्म आधारित व्यवस्था बन गई है।

श्रीलंका से आए प्रो. दया इदिरिसिंघे ने कहा कि उनके देश में शिक्षा मुफ्त है और सरकार द्वारा ही दी जाती है। सिंघली और तमिल भाषाओं को समान रूप से बढ़ावा देने के कारण श्रीलंका में सामाजिक समरसता बढ़ी है। उन्होंने कहा कि उनके देश में नौकरी के लिए आवेदन करते समय जाति का उल्लेख आवश्यक नहीं है। इससे भेदभाव खत्म हुआ है। प्रोफेसर श्याम गोस्वामी ने कहा कि हमने जाति और वर्ण को मिला दिया है। वर्ण जहां संस्कार आधारित स्वधर्म है, वहीं जाति बुद्धि का भ्रमण है। हमने इसे जन्म आधारित बना दिया है। उन्होंने कहा कि शास्त्रों में हिन्दू का कहीं जिक्र नहीं है। वल्लभाचार्य जैसे विद्वानों ने कहा है कि ब्राह्मण कोई जाति नहीं थी। उन्होंने समाज द्वारा जाति के बंधन तोड़ने का आव्हान किया।

---

6 देशबन्धु भोपाल, मंगलवार 14 फरवरी, 2017

पिछड़े लोगों की मदद से ही होगा भलाः अध्यात्मानंद

■ 91वीं इंडियन फिलोसॉफी कांग्रेस के दूसरे दिन कई अहम विषयों पर चर्चा

सांची/रायसेन, (देशबन्धु)। [illegible]

---

city भास्कर TUESDAY, 14/02/2017

सामाजिक समरसता के लिए शिक्षा और आपसी सामंजस्य बहुत जरूरी

91वीं इंडियन फिलॉस्फी कांग्रेस के दूसरे दिन कई अहम विषयों पर हुई चर्चा

EVENT IN CITY

सिटी रिपोर्टर • सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में जारी 91वीं भारती दर्शन कांग्रेस के दूसरे दिन सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों के उत्थान में अफर्मेटिव एक्शन पर सिंपोजियम में कई रचनात्मक विचार सामने आए। शिवानंद आश्रम अहमदाबाद के स्वामी अध्यात्मानंदजी ने बताया कि घावों की हीलिंग और समाज द्वारा पिछड़े लोगों की मदद और एकीकरण से ही लोगों का भला होगा। उन्होंने खाई पाटने वाले ऐसे दार्शनिकों की आवश्यकता गिनाई जो समाज में एकीकरण को बढ़ा सकें। प्रो. नितिन व्यास ने बताया कि

सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन से न्याय की स्थापना होगी। श्रीलंका से आए प्रो. दया इदिरिसिंघे ने बताया कि उनके देश में शिक्षा मुफ्त है और सरकार द्वारा ही दी जाती है। सिंघली एवं तमिल भाषाओं को समान रूप से बढ़ावा देने के कारण श्रीलंका में सामाजिक समरसता है। इस मौके पर प्रो. श्याम गोस्वामी ने कहा कि हमने जाति और वर्ण को मिला दिया है। वर्ण जहां संस्कार आधारित स्वधर्म है वहीं जाति बुद्धि का भ्रमण है जिसे हमने जन्म आधारित कर दिया। शास्त्र में हिंदू का कहीं जिक्र नहीं है। वल्लभाचार्य जैसे विद्वानों ने कहा है कि ब्राह्मण कोई जाति नहीं थी। उन्होंने समाज द्वारा जाति के बंधन तोड़ने का आव्हान किया। एंडोमेंट लेक्चर सीरीज में कनाडा से आए कल्पेश भट्ट ने स्वामीनारायण संप्रदाय और शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत के बीच अंतर की बात की। लेक्चर सीरीज के बाद हुए तकनीकी सत्र में पांच अलग-अलग विषयों दर्शन का इतिहास, तत्वमीमांसा और ज्ञानमीमांसा, आचार और सामाजिक दर्शन, अध्यात्म एवं विज्ञान एवं धर्म पर 34 शोध-पत्र पढ़े गए।

FREEPRESS Tuesday / Bhopal February 14, 2017 **13**

Bring backward people to mainstream for welfare of all: Swami Adhyatmanand

• OUR STAFF REPORTER
BHOPAL

Sanchi University for Buddhist and Indic Studies holds Asian Philosophical conference on Monday.

In the ongoing 91st Bharati Darshan Congress at Sanchi University for Buddhist-Indic Studies on Monday, a symposium on affirmative action in the uplift of socially backward people was organized.

Swami Adhyatmanand from Shivanand Ashram, Ahmedabad, said people's welfare is possible by extending helping hand to backward people and by social integration. He stressed on free and compulsory education as a tool to promote social integration. Professor Nitin Vyas said positive social change would set up justice.

Professor Daya Idirisinghe from Sri Lanka, said social harmony in Sri Lanka is the outcome of equal treatment given to Sinhalese and Tamil languages. Professor Shyam Goswami and Prof BP Sharma also spoke on the occasion.

बदलते जमाने का अखबार **पीपुल्स समाचार** भोपाल, मंगलवार 14 फरवरी, 2017

श्रीलंका में शिक्षा फ्री है: इदिरिसिंघे

सांची विवि में आयोजित भारती दर्शन कांग्रेस का दूसरा दिन

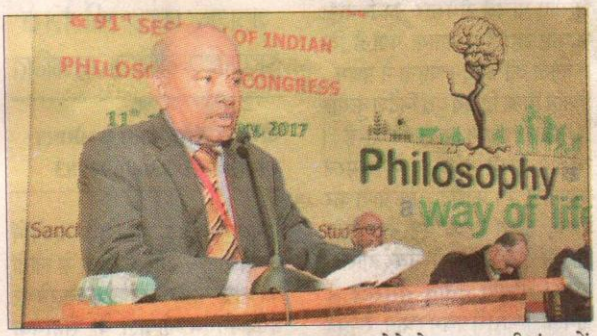

यंग रिपोर्टर • भोपाल
editor@peoplessamachar.co.in

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विवि में जारी 91वीं भारती दर्शन कांग्रेस के दूसरे दिन सोमवार को सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों के उत्थान में अफर्मेटिव एक्शन पर सिंपोसियम में कई रचनात्मक विचार सामने आए।

प्रो. बीपी शर्मा ने कहा कि उपनिषद् की शिक्षा शाब्दिक बनकर रह गई, क्योंकि जाति व्यवस्था जन्म आधारित व्यवस्था बन गई। श्रीलंका से आए प्रो. दया इदिरिसिंघे ने कहा कि उनके देश में शिक्षा मुफ्त है और सरकार द्वारा ही दी जाती है। सिंघली एवं तमिल भाषाओं को समान रूप से बढ़ावा देने के कारण श्रीलंका में सामाजिक समरसता है। उन्होंने कहा कि उनके देश में जाति का उल्लेख किसी भी नौकरी के आवेदन में आवश्यक नहीं है और इससे समरसता बढ़ाने में मदद मिली है।

भोजपाल
स्वदेश भोपाल, 14 फरवरी 2017 12

चयन समिति गठित

राज्य शासन ने मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद के महानिदेशक पद पर चयन के लिये समिति गठित की है। मुख्य सचिव समिति के अध्यक्ष होंगे। कुलपति राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय समिति के सदस्य होंगे।

चर्चा } 91वी इंडियन फिलोसॉफी कांग्रेस में अहम विषयों पर चर्चा, दर्शन पुनर्लेखन पर बनी सहमति

सामाजिक समरसता हेतु शिक्षा और आपसी सामंजस्य अहम

« स्वदेश संवाददाता। भोपाल

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में जारी 91वीं भारती दर्शन कॉंग्रेस के दूसरे दिन सामाजिक रुप से पिछड़े लोगों के उत्थान में अफर्मेटिव एक्शन पर सिंपोसियम में कई रचनात्मक विचार सामने आए। शिवानंद आश्रम एमदाबाद के स्वामी अध्यात्मानंदजी ने कहा कि घावों की हीलिंग और समाज द्वारा पिछड़े लोगों की मदद और एकीकरण से ही लोगों का भला होगा। उन्होने खाई पाटने वाले ऐसे दार्शनिकों की आवश्यकता गिनाई जो समाज में एकीकरण को बढ़ा सके। उन्होने अनिवार्य निशुल्क शिक्षा को समाधान बताया। प्रो नितिन व्यास ने कहा कि सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन से न्याय की स्थापना होगी। प्रो बीपी शर्मा ने कहा कि उपनिषद की शिक्षा शाब्दिक बनकर रह गई क्योंकि जाति व्यवस्था जन्म आधारित व्यवस्था बन गई। श्रीलंका से आए प्रो दया इदिरिसिंघे ने कहा कि उनके देश में शिक्षा मुफ्त है और सरकार द्वारा ही दी जाती है। सिंघली एवं तमिल भाषाओं को समान रुप से बढ़ावा देने के कारण श्रीलंका में सामाजिक समरसता है। उन्होने कहा कि उनके देश में जाति का उल्लेख किसी भी नौकरी के आवेदन में आवश्यक नहीं है और इससे समरसता बढ़ाने में मदद मिली है। इस मौके पर प्रो श्याम गोस्वामी ने कहा कि हमने जाति और वर्ण को मिला दिया है। वर्ण जहां संस्कार आधारित स्वधर्म है वहीं जाति बुद्धि का भ्रमण है जिसे हमने जन्म आधारित कर दिया। उन्होने कहा कि शास्त्र में हिंदू का कहीं जिक्र नहीं है। वल्लभाचार्य जैसे विद्वानों ने कहा है कि ब्राह्मण कोई जाति नहीं थी। उन्होने समाज द्वारा जाति के बंधन तोड़ने का आव्हान किया।

धर्म का स्वरूप प्रेम पर आधारित

एंड्रोमेंट लेक्चर सीरीज़ में कनाडा से आए कल्पेश भट्ट ने स्वामीनारायण संप्रदाय और शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत के बीच अंतर की बात की। मंजुलिका घोष ने धार्मिक बहुलतावाद में भाषा, प्रतीक, देव, अभिव्यक्ति, मुक्ति के स्वरुप और साधनों में विविधिता बताई। उन्होने कहा कि बोधिसत्व का आदर्श सभी को शामिल करता है। प्रो अमरनाथ झा ने कहा कि समाज का स्वरुप इससे तय होता है कि धर्म का स्वरुप प्रेम और समर्पण पर आधारित है या घृणा और हिंसा पर। उन्होने गांधीजी को उद्धृत करते हुए कहा कि बापू ने धर्म को जीवनशैली मानते हुए कहा कि सर्व-धर्म समभाव में सभी मूल्य विद्यमान है। वल्लभाचार्य वेदांत व्याख्यान में वल्लभ वेदांत के संदर्भ में आत्मानुभूति पर बोलते हुए प्रो श्याम मनोहर गोस्वामी ने कहा कि विद्या के जरिये अमृत प्राप्त करने का दृष्टांत हमारे ग्रंथों में है। उन्होने कहा कि मांडूक्योपनिषद में चेतना की अवस्थाएं समझाई गई है और आत्मानुभूति प्रत्यक्ष के साथ परोक्ष रुप में भी हो सकती है।

मूल गंथ बनेंगे आधार

भारतीय दर्शन के इतिहास को मौजूदा परिप्रेक्ष्य में लिखने पर भी इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस में सहमति बनी। इस मामले पर चर्चा में पुनर्लेखन को विषय आधारित या समस्या आधारित करने, मूल ग्रंथों को आधार बनाने और तकनीक का अधिकाधिक उपयोग करने के सुझाव आए।

कई विचारकों ने पुनर्लेखन में भारतीय पक्ष को आधार बनाने का विचार दिया। लेक्चर सीरीज के बाद हुए तकनीकी सत्र में पांच अलग-अलग विषयों यथा- दर्शन का इतिहास, तत्वमीमांसा और ज्ञानमीमांसा, आचार और सामाजिक दर्शन, अध्यात्म एवं विज्ञान एवं धर्म पर 34 शोध-पत्र पढ़े गए। दिन के अंतिम सत्र में इच्छामृत्यु विषय पर सिंपोसियम में विचारकों एवं चिंतको ने अपने विचार व्यक्त किए। 14 फरवरी को इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस की बैठक में इंडोमेंड लेक्चर सीरीज में सांस्कृतिक एवं धार्मिक समझ पर प्रो गणेश प्रसाद दास लेक्चर होगा। इसी कड़ी में दया कृष्ण मेमोरियल लेक्चर एवं के एस मूर्ति मेमोरियल लेक्चर भी होगा। तकनीकी सत्रों में तत्वमीमांसा और ज्ञानमीमांसा, आचार और सामाजिक दर्शन एवं धर्म पर 32 शोध-पत्र पढ़े जाएंगे। इसी दिन 2.30 बजे से समापन सत्र का आयोजन होगा।

नव भारत भोपाल, मंगलवार, 14 फरवरी, 2017

सकारात्मक बदलाव से ही न्याय संभव : व्यास

भोपाल,13 फरवरी, नभासं. सांची विश्वविद्यालय में चल रही 91वीं भारती दर्शन कॉंग्रेस के दूसरे दिन सोमवार को सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों के उत्थान में अफर्मेटिव एक्शन पर सिंपोजियम में कई रचनात्मक विचार सामने आए.

91वीं भारती दर्शन कांग्रेस

शिवानंद आश्रम अहमादाबाद के स्वामी अध्यात्मानंदजी ने कहा कि घावों की हीलिंग और समाज द्वारा पिछड़े लोगों की मदद और एकीकरण से ही होगा. उन्होंने खाई पाटने वाले ऐसे दार्शनिकों की आवश्यकता गिनाई जो समाज में एकीकरण को बढ़ा सकें. प्रो. नितिन व्यास ने कहा कि सकारात्मक परिवर्तन से न्याय की स्थापना होगी.

प्रो. बीपी शर्मा ने कहा कि उपनिषद की शिक्षा शाब्दिक बनकर रह गई है क्योंकि जाति व्यवस्था जन्म आधारित व्यवस्था बन गई.

नौकरी के आवेदन में जाति का उल्लेख जरूरी नहीं : दया

श्रीलंका से आए प्रो. दया इदिरिसिंघे ने कहा कि उनके देश में शिक्षा मुफ्त है और सरकार द्वारा ही दी जाती है. सिंघली एवं तमिल भाषाओं को समान रुप से बढ़ावा देने के कारण श्रीलंका में सामाजिक समरसता है .उन्होंने कहा कि उनके देश में जाति का उल्लेख किसी भी नौकरी के आवेदन में आवश्यक नहीं है और इससे समरसता बढ़ाने में मदद मिली है.

सांची यूनिवर्सिटी में आज आएंगे मुख्यमंत्री

रायसेन के पास ग्राम बारला में आयोजित होगा कार्यक्रम

रायसेन (ब्यूरो)। ग्राम बारला स्थित सांची यूनिवर्सिटी में शुरू हो रही चार दिवसीय ऐशियन फिलोसपी कार्यशाला का मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान शनिवार को शुभारंभ करेंगे। वे सुबह 10 बजे सांची यूनिवर्सिटी पहुंचेंगे। इस दौरान उनके साथ श्रीलंका महाबोधि सोसायटी के अध्यक्ष बानगल उपथिस्स नायक थैरो, वनमंत्री डॉ. गौरीशंकर शेजवार, पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री सुरेन्द्र पटवा भी उपस्थित रहेंगे। इस कार्यशाला में दर्शन शास्त्र से जुड़े विभिन्न विषयों पर विस्तार से चर्चा की जाएगी। साथ ही दर्शनशास्त्र के विद्वान अपने व्याख्यान देंगे। कार्यशाला के दूसरे दिन 12 फरवरी को 91वीं इंडिया फिलोसपिकल कांग्रेस में प्रसिद्ध दर्शनशास्त्री प्रो. राम जी. सिंह एवं इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के फिलोसपी विभाग प्रमुख प्रो. डी.एन. द्विवेदी दर्शनशास्त्र पर अपने व्याख्यान देंगे। एवं 14 फरवरी को पूना के प्रो. ए.पी. जमखेड़कर एवं महिला एवं बाल विकास विभाग मंत्री श्रीमती अर्चना चिटनीस एवं इंडिया काउंसिल ऑफ फिलोसपिकल रिसर्च नईदिल्ली के चेयरमैन प्रो. एसआर भट्ट उपस्थित रहकर व्याख्यान देंगे।

पत्रिका
Bhopal . Friday
10/02/2017

एशियन फिलॉस्फी कांफ्रेंस आज से

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

भोपाल • मध्य प्रदेश में पहली बार एशियाई फिलॉस्फी कांफ्रेंस का आयोजन होने जा रहा है। सांची विवि में होने वाली इस कांफ्रेंस में कई देशों से एक्सपर्ट पहुंच रहे है। कांफ्रेंस का शुभारंभ मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान करेंगे। 11 से 14 फरवरी के दौरान विश्वविद्यालय में एशियन फिलॉस्फी कांफ्रेंस के साथ 91वीं इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस का आयोजन भी होगा। एशियाई फिलॉस्फिकल कांफ्रेंस में श्रीलंकाई महाबोधि सोसायटी के बनागला उपतिस्स नायक थैरो, वन मंत्री डॉ. गौरीशंकर शेजवार, पयर्टन एवं संस्कृति मंत्री सुरेंद्र पटवा भी शामिल होंगे। इस दौरान एशियाई परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण प्रबंधन के माध्यम से शांति कायम रखने में प्रौद्योगिकी की भूमिका पर विचार होगा। 4 दिन के इस आयोजन में करीब 250 वैश्विक एवं एशियाई चिंतक-विचारक, दार्शनिक एवं शोधार्थी मानवकल्याण के निमित्त ज्ञान, बुद्धि और प्रायोगिक पक्ष के विभिन्न आयामों पर अपने विचार एक दूसरे से साझा करेंगे। 12 फरवरी को 91वीं भारती दर्शन कांग्रेस का शुभारंभ मशहूर स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी और दार्शनिक प्रो रामजी सिंह करेंगे।

पत्रिका
Bhopal . SUNDAY
12/02/2017

आदर्श है भारतीय दर्शन

भोपाल • प्रदेश में पहली बार एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में हुआ। संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री सुरेंद्र पटवा ने उद्घाटन करते हुए कहा कि वैदिक एवं बौद्ध परंपराएं एशियाई और विश्व एकता के लिए आदर्श है। मौजूदा दौर में भारतीय दर्शन के तत्वों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। श्रीलंकाई महाबोधि सोसायटी के बनागला उपतिस्स नायक थैरो ने कहा कि पश्चिमी दर्शन बहस करने की चीज है जबकि पूर्वी दर्शन व्यवहार में उतारने की। एशियाई फिलोसॉफी कांग्रेस के चेयरमैन प्रो.एसआर भट्ट ने उद्घाटन सत्र में कहा कि पश्चिमी दर्शन

में बुद्धि पर जोर होता है जबकि पूर्वी दर्शन में बुद्धि के साथ जीवन जीने और जीवनस्तर को ऊंचा उठाने पर खासा ध्यान दिया जाता है। कुलपति आचार्य प्रो यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि एशियाई कांफ्रेंस के जरिए सांची विवि दर्शन विश्व को अपनी गंभीरता और दर्शन के प्रति निष्ठा बताना चाहता है।

ANCHOR | एशियाई फिलॉसफी कांफ्रेंस का शुभारंभ

पत्रिका पेज 12/02/17

बौद्ध परंपराएं विश्व एकता के लिए आदर्श

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

रायसेन. वैदिक एवं बौद्ध परंपराएं एशियाई और विश्व एकता के लिए आदर्श हैं। मौजूदा दौर में भारतीय दर्शन के तत्वों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है।

यह बात संस्कृति मंत्री सुरेंद्र पटवा ने शनिवार को सांची युनिवर्सिटी में आयोजित एशियाई फिलॉसफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ करते हुए कही। पटवा ने एशियाई फ्लोसॉफिकल कॉन्फ्रेंस से मिलने वाले बिंदुओं को क्रियान्वित कराने में संस्कृति मंत्रालय की मदद का आश्वासन भी दिया। मध्य प्रदेश में पहली बार आयोजित एशियाई फ्लोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ सांची बौद्ध, भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में हुआ। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्रीलंकाई महाबोधि सोसायटी के बनागला उपतिस्स नायक थैरो ने कहा कि पश्चिमी दर्शन बहस करने की चीज है। जबकि पूर्वी दर्शन व्यवहार में उतारने की। थैरो ने कहा कि प्रवासी दिवस की शुरुआत सर्वप्रथम सांची से ही हुई थी। सांची ने ही एशिया को एक नया दर्शन और जीवन व्यवहार दिया। एशियाई

रायसेन. दीप प्रज्ज्वलित कर किया शुभारंभ।

फ्लोसॉफी कांग्रेस के चेयरमैन प्रो. एसआर भट्ट ने कहा कि पश्चिमी दर्शन में बुद्धि पर जोर होता है, जबकि पूर्वी दर्शन में बुद्धि के साथ जीवन जीने और जीवनस्तर को ऊंचा उठाने पर खासा ध्यान दिया जाता है। उन्होंने कहा कि भारतीय दर्शन विश्वमानव की अवधारणा पर कार्य करता है जो मौजूदा दौर में और भी ज्यादा प्रासंगिक हो गया है। विवि के कुलपति आचार्य प्रो यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि एशियाई कॉन्फ्रेंस के जरिए सांची विवि दर्शन विश्व को अपनी गंभीरता और दर्शन के प्रति निष्ठा बताना चाहता है। विवि वैदिक एवं बौद्ध दर्शन के सूत्रों को एकीकृत करने, भारतीय दर्शन को मौजूदा परिप्रेक्ष्य में पुनः परिभाषित करने और नए ज्ञान के सृजन के प्रति प्रतिबद्ध है। 4 दिन के इस आयोजन में करीब 250 वैश्विक एवं एशियाई चिंतक, विचारक, दार्शनिक एवं शोधार्थी मानवकल्याण के निमित्त ज्ञान, बुद्धि और प्रायोगिक पक्ष के विभिन्न आयामों पर अपने विचार एक दूसरे से साझा करेंगे।

हरिभूमि भोपाल, रविवार 12 फरवरी 2017 | 03

फिलोसॉफी कांफ्रेंस | प्रदेश में पहली बार आयोजन, इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस की होगी शुरुआत

बौद्ध परंपराएं विश्व एकता के लिए आदर्श

हरिभूमि न्यूज. भोपाल

शनिवार को प्रदेश में पहली बार आयोजित एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में हुआ। मप्र के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री सुरेंद्र पटवा ने कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन करते हुए कहा कि वैदिक एवं बौद्ध परंपराएं एशियाई और विश्व एकता के लिए आदर्श है।

मौजूदा दौर में भारतीय दर्शन के तत्वों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। पटवा ने एशियाई फिलोसॉफिकल कॉन्फ्रेंस से मिलने वाले बिंदुओं को क्रियान्वित कराने में संस्कृति मंत्रालय की मदद का आश्वासन भी दिया।

इन्होंने लिया कॉन्फ्रेंस में हिस्सा

कॉन्फ्रेंस में सन मून यूनिवर्सिटी, दक्षिण कोरिया से प्रो. जियो लियांग ली, श्रीलंका के आधिकारिक भाषा आयोग के चेयरमैन प्रो दया इदीरिसिंघे, वियतनाम बुद्धिस्ट यूनिवर्सिटी होची मिन्ह सिटी के प्रो. ली मॉन थेट मौजूद रहे।

पश्चिमी दर्शन बहस करने की चीज

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्रीलंकाई महाबोधि सोसायटी के बनागला उपतिस्स नायक थैरो ने कहा कि पश्चिमी दर्शन बहस करने की चीज है, जबकि पूर्वी दर्शन व्यवहार में उतारने की। श्री थैरो ने कहा कि प्रवासी दिवस की शुरूआत सर्वप्रथम सांची से ही हुई थी और सांची ने ही एशिया को एक नया दर्शन और जीवन व्यवहार दिया।

बौद्ध यूनिवर्सिटी में एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ

प्रदेश के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री सुरेंद्र पटवा ने किया कार्यक्रम का उद्घाटन

जागरण, रायसेन

मध्य प्रदेश में पहली बार आयोजित एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में हुआ। मप्र के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री सुरेंद्र पटवा ने कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन करते हुए कहा कि वैदिक एवं बौद्ध परंपराएं एशियाई और विश्व एकता के लिए आदर्श है। उन्होंने कहा कि मौजूदा दौर में भारतीय दर्शन के तत्वों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। श्री पटवा ने एशियाई फिलोसॉफिकल कॉन्फ्रेंस से मिलने वाले बिंदुओं को क्रियान्वित कराने में संस्कृति मंत्रालय की मदद का आश्वासन भी दिया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्रीलंकाई महाबोधि सोसायटी के बनागला उपतिस्स नायक थैरो ने कहा कि पश्चिमी दर्शन बहस करने की चीज है जबकि पूर्वी दर्शन व्यवहार में उतारने की। श्री थैरो ने कहा कि प्रवासी दिवस की शुरुआत सर्वप्रथम सांची से. ही हुई थी और सांची ने ही एशिया को एक नया दर्शन और जीवन व्यवहार दिया। एशियाई फिलोसॉफी कांग्रेस के चेयरमैन प्रो. एसआर भट्ट ने उद्घाटन सत्र में कहा कि पश्चिमी दर्शन में बुद्धि पर जोर होता है जबकि पूर्वी दर्शन में बुद्धि के साथ जीवन जीने और जीवन स्तर को ऊंचा उठाने पर खासा ध्यान दिया जाता है। उन्होंने कहा कि भारतीय दर्शन विश्वमानव की अवधारणा पर कार्य करता है जो मौजूदा दौर में और भी ज्यादा प्रासंगिक हो गया है। उद्घाटन वक्तव्य देते हुए सांची विवि के कुलपति आचार्य प्रो. यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि एशियाई कॉन्फ्रेंस के जरिये सांची विवि दर्शन विश्व को अपनी गंभीरता और दर्शन के प्रति निष्ठा बताना चाहता है। उन्होंने कहा कि सांची विवि वैदिक एवं बौद्ध दर्शन के सूत्रों को एकीकृत करने, भारतीय दर्शन को मौजूदा परिप्रेक्ष्य में पुनः परिभाषित करने और नए ज्ञान के सृजन के प्रति प्रतिबद्ध है।

गोलमेज बैठक में बहुसांस्कृतिक समाज में न्याय और समानता की चुनौती के एशियाई समाधान पर बात हुई। इसी दौरान समकालीन एशियाई परिप्रेक्ष्य में स्वास्थ्य की अवधारणा को पुनर्भाषित करने पर भी विचारको, चिंतकों ने बहुमूल्य सुझाव एवं विचार दिए। एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस में सन मून यूनिवर्सिटी, दक्षिण कोरिया से प्रो. जियो लियांग ली, श्रीलंका के आधिकारिक भाषा आयोग के चेयरमैन प्रो. दया इदीरिसिंघे, वियतनाम बुद्धिस्ट यूनिवर्सिटी होची मिन्ह सिटी के प्रो. ली मॉन थेट, मियामी विवि अमेरिका के प्रो. रामाराव पप्पू, श्रीलंका के परास्नातक पाली एवं बौद्ध संस्थान के निदेशक प्रो. सुमनपाला, आचार्य सभा के महासचिव स्वामी परमात्मानंदजी, कनाडा में एशियाई अध्ययन के एमिरेट्स प्रोफेसर अशोक अकलुजकर, शंघाई विवि चीन की प्रो. हयान शेन, शिवानंद आश्रम एमदाबाद के स्वामी अध्यात्मानंदजी, इलाहाबाद विवि के दर्शन विभाग के पूर्व प्रमुख प्रो. जटाशंकर तिवारी, चेन्नई से प्रो. वेंकटचारी चतुर्वेदी स्वामी, कॉलेज ऑफ ऑर्ट एंव साइंस विभाग कनाडा में धार्मिक शिक्षा विभाग के प्रो. बृज सिन्हा और जैन विश्व भारती विवि के कुलपति प्रो. बीआर दुग्गड़ जैसे विशिष्ट विद्वान पहुंचे है।

4 दिन के इस आयोजन में करीब 250 वैश्विक एवं एशियाई चिंतक, विचारक, दार्शनिक एवं शोधार्थी मानवकल्याण के निमित्त ज्ञान, बुद्धि और प्रायोगिक पक्ष के विभिन्न आयामों पर अपने विचार एक दूसरे से साझा करेंगे। 12 फरवरी को 91वीं भारती दर्शन कॉग्रेंस का शुभारंभ मशहूर स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी और दार्शनिक प्रो रामजी सिंह करेंगे। इस कार्यकर्म की अध्यक्षता इलाहाबाद विवि में दर्शनशास्त्र विभाग के प्रमुख रहे प्रो. डीएन द्विवेदी करेंगे।

दैनिक जागरण दिनांक 12/02/17
Pg. रायसेन जागरण Pg. 04

सांची ने ही एशिया को दिया नया दर्शन और जीवन व्यवहारः पटवा

भास्कर संवाददाता | रायसेन

मध्य प्रदेश में पहली बार आयोजित एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ बारला गांव स्थित सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विवि में हुआ। शनिवार से शुरू हुई कॉन्फ्रेंस 14 फरवरी तक चलेगी। इस दौरान देश और विदेश से आए विद्वान दर्शन शास्त्र को लेकर मंथन कर रहे हैं।

उद्घाटन करते हुए प्रदेश के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री सुरेंद्र पटवा ने कहा कि वैदिक एवं बौद्ध परंपराएं एशियाई और विश्व एकता के लिए आदर्श हैं। उन्होंने कहा कि मौजूदा दौर में भारतीय दर्शन के तत्वों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। श्री पटवा ने एशियाई फिलोसॉफिकल कॉन्फ्रेंस से मिलने वाले बिंदुओं को क्रियान्वित कराने में संस्कृति मंत्रालय की मदद का आश्वासन दिया।

अध्यक्षता करते हुए श्रीलंकाई महाबोधि सोसायटी के बनागल उपतिस्स नायक थैरो ने कहा कि पश्चिमी दर्शन बहस करने की चीज है जबकि पूर्वी दर्शन व्यवहार में उतारने की। श्री थैरो ने कहा कि प्रवासी दिवस की शुरुआत सर्वप्रथम सांची से ही हुई थी और सांची ने ही एशिया को एक नया दर्शन और जीवन व्यवहार दिया।

सांची विवि के कुलपति आचार्य प्रो.यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि एशियाई कॉन्फ्रेंस के जरिए सांची विवि दर्शन विश्व को अपनी गंभीरता और दर्शन के प्रति निष्ठा बताना चाहता है।

एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ ,कल होगी इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस की शुरुआत

प्रकृति को बचाने के लिए कार्य करें : भट्ट

एशियाई फिलोसॉफी कांग्रेस के चेयरमैन प्रो. एसआर भट्ट ने भास्कर से चर्चा करते हुए कहा कि पर्यावरण के असंतुलन से शांति भंग होती है। उन्होंने कहा कि प्रकृति के प्रति अपना दृष्टिकोण रखें और उसे बचाने की दिशा में काम करें। इसके साथ ही हमारी भावी पीढ़ी को प्राकृतिक संसाधन से वंचित न करें। हम संसाधनों का उतना ही उपयोग करें, जितनी हमारी आवश्यकता है। इस कांफ्रेंस के माध्यम से भारतीय संस्कृति को विश्व में पहुंचाने का प्रयास कर रहे हैं।

संस्कृति, पर्यावरण और शांति पर मंथन

मुख्य सत्र में एशियाई परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण प्रबंधन के माध्यम से शांति कायम रखने में प्रौद्योगिकी की भूमिका पर विचार हुआ। समाज में न्याय और समानता की चुनौती के एशियाई समाधान पर बात हुई। स्वास्थ्य की अवधारणा को पुनर्भाषित करने पर भी विचारकों-चिंतकों ने बहुमूल्य सुझाव एवं विचार दिए।

संस्कृत के बिना सभी दर्शन अधूरा : अकलुजकर

कनाडा से आए एशियाई अध्ययन के एमिरेट्स प्रोफेसर अशोक अकलुजकर ने बताया कि संस्कृत के बिना सभी दर्शन अधूरे हैं। दर्शन की आवश्यकता को लेकर कनाडा और भारत में समानता है। भारत में पहले से ही दर्शन को लेकर लोग जागरूक हैं, लेकिन कनाडा में अब इसको लेकर लोग रुचि दिखा रहे हैं। कनाडा में संस्कृत पढ़ने को लेकर लोगों में रुचि बढ़ी है।

देश और विदेश से आए ये विद्वान

कॉन्फ्रेंस में सन मून यूनिवर्सिटी दक्षिण कोरिया से प्रो. जियो लियांग ली,श्रीलंका के आधिकारिक भाषा आयोग के चेयरमैन प्रो. दया इदीरिसिंघे, वियतनाम बुद्धिस्ट यूनिवर्सिटी होची मिन्ह सिटी के प्रो. ली मॉन थेट, मियामी विवि अमेरिका के प्रो. रामाराव पप्पू, श्रीलंका के परास्नातक पाली एवं बौद्ध संस्थान के निदेशक प्रो. सुमनपाला, आचार्य सभा के महासचिव स्वामी परमात्मानंदजी, कनाडा में एशियाई अध्ययन के एमिरेट्स प्रोफेसर अशोक अकलुजकर, शंघाई विवि चीन की प्रो. हयान शेन, शिवानंद आश्रम अमदाबाद के स्वामी अध्यात्मानंदजी, इलाहाबाद विवि के दर्शन विभाग के पूर्व प्रमुख प्रो. जटाशंकर तिवारी, चेन्नई से प्रो. वेंकटचारी चतुर्वेदी स्वामी, कनाडा में धार्मिक शिक्षा विभाग के प्रो. बृज सिन्हा और जैन विश्व भारती विवि के कुलपति प्रो. बी आर दुग्गड़ पहुंचे हैं।

भोपाल । रविवार । 12 फरवरी 2017

नया इंडिया

दुनिया का दर्शनशास्त्र का ज्ञान होगा साझा

सांची बौद्ध भारतीय अध्ययन विश्वविद्यालय में एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ

मध्यप्रदेश में पहली बार ऐसा आयोजन

रायसेन ■ प्रादेशिक डेस्क

मध्य प्रदेश में पहली बार आयोजित एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में हुआ। शुभारंभ कार्यक्रम में संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री सुरेंद्र पटवा ने कहा कि वैदिक एवं बौद्ध परंपराएं एशियाई और विश्व एकता के लिए आदर्श है। उन्होने कहा किमोजूदा दौर में भारतीय दर्शन के तत्वों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। वहीं कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्रीलंकाई महाबोधि सोसायटी के बनागला उपतिस्स नायक थेरो ने कहा कि पश्चिमी दर्शन बहस करने की चीज है जबकि पूर्वी दर्शन व्यवहार में उतारने की। थेरो ने कहा कि प्रवासी दिवस की शुरुआत सर्वप्रथम सांची से ही हुई थी और सांची ने ही एशिया को एक नया दर्शन और जीवन व्यवहार दिया। एशियाई फिलोसॉफी कांग्रेस के चेयरमैन प्रो. एस. आर भट्ट ने कहा कि पश्चिमी दर्शन में बुद्धि पर ज़ोर होता है जबकि पूर्वी दर्शन में बुद्धि के साथ जीवन जीने और जीवनस्तर को ऊंचा उठाने पर खासा ध्यान दिया जाता है। उन्होने कहा कि भारतीय दर्शन विश्वमानव की अवधारणा पर कार्य करता है जो मोजूदा दौर में और भी ज्यादा प्रासंगिक हो गया है। सांची विवि के कुलपति आचार्य प्रो यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि एशियाई कॉन्फ्रेंस के जरिये सांची विवि दर्शन विश्व को अपनी गंभीरता और दर्शन के प्रति निष्ठा बताना चाहता है। उन्होने कहा कि सांची विवि वैदिक एवं बौद्ध दर्शन के सूत्रों को एकीकृत करने, भारतीय दर्शन को मोजूदा परिप्रेक्ष्य में पुनः परिभाषित करने और नए ज्ञान के सृजन के प्रति प्रतिबद्ध है।

एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस में सन मून यूनिवर्सिटी दक्षिण कोरिया से प्रो.जियो लियांग ली श्रीलंका के आधिकारिक भाषा आयोग के चेयरमैन प्रो दया इदीरिसिंघे, वियतनाम बुद्धिस्ट यूनिवर्सिटी होची मिन्ह सिटी के प्रो ली मॉन थेट, मियामी विवि अमेरिका के प्रो रामाराव पप्पू, श्रीलंका के परास्नातक पाली एवं बौद्ध संस्थान के निदेशक प्रो सुमनपाला, कॉलेज ऑफ आर्ट एंव साइंस विभाग कनाडा में धार्मिक शिक्षा विभाग के प्रो बृज सिन्हा और जैन विश्व भारती विवि के कुलपति प्रो बी आर दुग्गड़ जैसे विशिष्ट विद्वान पहुंचे है।

साप्ताहिक लोकदेश / भोपाल, रविवार 12 फरवरी 2017 / www.lokdesh.com

—संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री सुरेंद्र पटवा ने किया एशियाई फिलॉसफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ—

'वैदिक और बौद्ध परम्पराएं विश्व एकता के लिए आदर्श'

लोकदेश ब्यूरो ■ रायसेन

प्रदेश में पहली बार आयोजित एशियाई फिलॉसफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में हुआ। मप्र के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री सुरेंद्र पटवा ने कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन करते हुए कहा कि वैदिक एवं बौद्ध परंपराएं एशियाई और विश्व एकता के लिए आदर्श है। उन्होंने कहा कि मौजूदा दौर में भारतीय दर्शन के तत्वों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। पटवा ने एशियाई फिलॉसॉफिकल कॉन्फ्रेंस से मिलने वाले बिंदुओं को क्रियान्वित कराने में संस्कृति मंत्रालय की मदद का आश्वासन भी दिया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्रीलंकाई महाबोधि सोसायटी के बनागला उपतिस्स नायक थैरो ने कहा कि पश्चिमी दर्शन बहस करने की चीज है जबकि पूर्वी दर्शन व्यवहार में उतारने की। श्री थैरो ने कहा कि प्रवासी दिवस की शुरूआत सर्वप्रथम सांची से ही हुई थी और सांची ने ही एशिया को एक नया दर्शन और जीवन व्यवहार दिया। एशियाई फिलॉसफी कांग्रेस के चेयरमैन प्रो. एस. आर. भट्ट ने उद्घाटन सत्र में कहा कि पश्चिमी दर्शन में बुद्धि पर जोर होता है।

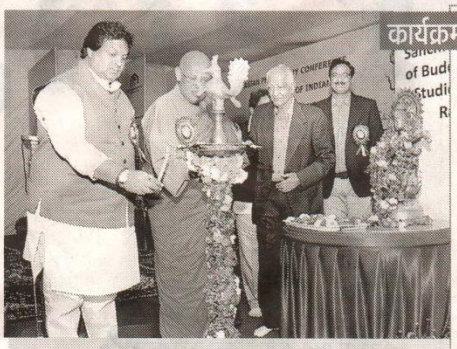

नए ज्ञान का सृजन

भट्ट ने कहा कि भारतीय दर्शन विश्वमानव की अवधारणा पर कार्य करता है जो मौजूदा दौर में और भी ज्यादा प्रासंगिक हो गया है। उद्घाटन वक्तव्य देते हुए सांची विवि के कुलपति आचार्य प्रो. यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि एशियाई कॉन्फ्रेंस के जरिये सांची विवि दर्शन विश्व को अपनी गंभीरता और दर्शन के प्रति निष्ठा बताना चाहता है। उन्होंने कहा कि सांची विवि वैदिक एवं बौद्ध दर्शन के सूत्रों को एकीकृत करने, भारतीय दर्शन को मौजूदा परिप्रेक्ष्य में पुनः परिभाषित करने और नए ज्ञान के सृजन के प्रति प्रतिबद्ध है।

कार्यक्रम में ये होंगे शामिल

एशियाई फिलॉसफी कॉन्फ्रेंस में सन मून यूनिवर्सिटी, दक्षिण कोरिया से प्रो. जियो लियांग ली, श्रीलंका के आधिकारिक भाषा आयोग के चेयरमैन प्रो दया इदीरिसिंघे, वियतनाम बुद्धिस्ट यूनिवर्सिटी होची मिन्ह सिटी के प्रो. ली मॉन थेट, मियामी विवि अमेरिका के प्रो. रामाराव पप्पू, श्रीलंका के परास्नातक पाली एवं बौद्ध संस्थान के निदेशक प्रो. सुमनपाला, आचार्य सभा के महासचिव स्वामी परमात्मानंदजी, कनाडा में एशियाई अध्ययन के एमिरेट्स प्रो. अशोक अकलुजकर, शंघाई विवि चीन की प्रो हयान शेन, शिवानंद आश्रम एमदाबाद के स्वामी अध्यात्मानंदजी, इलाहाबाद विवि के दर्शन विभाग के पूर्व प्रमुख प्रो. जटाशंकर तिवारी, चेन्नई से प्रो. वेंकटचारी चतुर्वेदी स्वामी जैसे विशिष्ट विद्वान पहुंचे है।

भारतीय और बौद्ध परंपराएं विश्व एकता के लिए आदर्श : पटवा

रायसेन। सांची यूनिवर्सिटी में कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ करते पर्यटन मंत्री सुरेन्द्र पटवा।

■ मप्र में पहली बार आयोजन, कल होगी इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस की शुरुआत

रायसेन। मध्य प्रदेश में पहली बार आयोजित एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में हुआ। म.प्र. के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री सुरेंद्र पटवा ने कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन करते हुए कहा कि वैदिक एवं बौद्ध परंपराएं एशियाई और विश्व एकता के लिए आदर्श है। उन्होने कहा कि मौजूदा दौर में भारतीय दर्शन के तत्वों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। श्री पटवा ने एशियाई फिलोसॉफिकल कॉन्फ्रेंस से मिलने वाले बिंदुओं को क्रियान्वित कराने में संस्कृति मंत्रालय की मदद का आश्वासन भी दिया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्रीलंकाई महाबोधि सोसायटी के बनागला उपतिस्स नायक थैरो ने कहा कि पश्चिमी दर्शन बहस करने की चीज है जबकि पूर्वी दर्शन व्यवहार में उतारने की। श्री थैरो ने कहा कि प्रवासी दिवस की शुरुआत सर्वप्रथम सांची से ही हुई थी और सांची ने ही एशिया को एक नया दर्शन और जीवन व्यवहार दिया। एशियाई फिलोसॉफी कांग्रेस के चेयरमैन प्रो. एसआर भट्ट ने उद्घाटन सत्र में कहा कि पश्चिमी दर्शन में बुद्धि पर जोर होता है जबकि पूर्वी दर्शन में बुद्धि के साथ जीवन जीने और जीवनस्तर को ऊंचा उठाने पर खासा ध्यान दिया जाता है। उन्होने कहा कि भारतीय दर्शन विश्वमानव की अवधारणा पर कार्य करता है जो मौजूदा दौर में और भी ज्यादा प्रासंगिक हो गया है। उद्घाटन वक्तव्य देते हुए सांची विवि के कुलपति आचार्य प्रो. यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि एशियाई कॉन्फ्रेंस के जरिये सांची विवि दर्शन विश्व को अपनी गंभीरता और दर्शन के प्रति निष्ठा बताना चाहता है। उन्होने कहा कि सांची विवि वैदिक एवं बौद्ध दर्शन के सूत्रों को एकीकृत करने, भारतीय दर्शन को मौजूदा परिप्रेक्ष्य में पुन: परिभाषित करने और नए ज्ञान के सृजन के प्रति प्रतिबद्ध है। एशियाई पहचान के सर्वसम्मत सिद्धांतों को प्रतिपादित करने और अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले दार्शनिकों का एक वैश्विक मंच तैयार करने के उद्देश्य से हो रही एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस के मुख्य सत्र में एशियाई परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण प्रबंधन के माध्यम से शांति कायम रखने में प्रौद्योगिकी की भूमिका पर विचार हुआ।

भोपाल, रविवार, 12 फरवरी 2017 | हिन्दी मेल | रायसेन

सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में एशियाई फिलॉसफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ

दर्शनशास्त्र को जानने जुटे देश-विदेश के मेहमान

निज संवाददाता

रायसेन, 11 फरवरी। मध्य प्रदेश में पहली बार आयोजित एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में हुआ। शुभारंभ कार्यक्रम में संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री सुरेंद्र पटवा ने कहा कि वैदिक एवं बौद्ध परंपराएं एशियाई और विश्व एकता के लिए आदर्श हैं।

उन्होंने कहा कि मौजूदा दौर में भारतीय दर्शन के तत्वों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। यहीं कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्रीलंकाई महाबोधि सोसायटी के बनागला उपतिस्स नायक थैरो ने कहा कि पश्चिमी दर्शन बहस करने की चीज है जबकि पूर्वी दर्शन व्यवहार में उतारने की। श्री थैरो ने कहा कि प्रवासी दिवस की शुरुआत सर्वप्रथम सांची से ही हुई थी और सांची ने ही एशिया को एक नया दर्शन और जीवन व्यवहार दिया। एशियाई फिलोसॉफी कांग्रेस के चेयरमैन प्रो. एस. आर भट्ट ने कहा कि पश्चिमी दर्शन में बुद्धि पर जोर होता है जबकि पूर्वी दर्शन में बुद्धि के साथ जीवन जीने और जीवनस्तर को ऊंचा उठाने पर खासा ध्यान दिया जाता है। उन्होंने कहा कि भारतीय दर्शन विश्वमानव की अवधारणा पर कार्य करता है जो मौजूदा दौर में और भी ज्यादा प्रासंगिक हो गया है। सांची विवि के कुलपति आचार्य प्रो. यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि एशियाई कॉन्फ्रेंस के जरिये सांची विवि दर्शन विश्व को अपनी गंभीरता और दर्शन के प्रति निष्ठा बताना चाहता है। उन्होंने कहा कि सांची विवि वैदिक एवं बौद्ध दर्शन के सूत्रों को एकीकृत करने, भारतीय दर्शन को मौजूदा परिप्रेक्ष्य में पुन: परिभाषित करने और नए ज्ञान के सृजन के प्रति प्रतिबद्ध है।

कान्फ्रेंस में विद्वानों का लगा जमघट

एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस में सन मून यूनिवर्सिटी दक्षिण कोरिया से प्रो.जियो नियाग ली, श्रीलंका के आधिकारिक भाषा आयोग के चेयरमैन प्रो. दया इदीरिसिंघे, वियतनाम बुद्धिस्ट यूनिवर्सिटी हो ची मिन्ह सिटी के प्रो ली मीन थेट, मियामी विवि अमेरिका के प्रो रामाराव पप्पू, श्रीलंका के पराक्रमा पाली एवं बौद्ध संस्थान के निदेशक प्रो सुमनपाला, आचार्य सभा के महासचिव स्वामी परमात्मानंदजी, कनाडा में एशियाई अध्ययन के एमिरेट्स प्रोफेसर अशोक अकलुजकर, शंघाई विवि चीन की प्रो हुयान शेन, शिवानंद आश्रम एमदाबाद के स्वामी अध्यात्मानंदजी, इलाहाबाद विवि के दर्शन विभाग के पूर्व प्रमुख प्रो. जटाशंकर तिवारी, चेन्नई से प्रो. वेंकटचारी चतुर्वेदी स्वामी, कॉलेज ऑफ आर्ट एंड साइंस विभाग कनाडा में धार्मिक शिक्षा विभाग के प्रो कृष्ण सिन्हा और जैन विश्व भारती विवि के कुलपति प्रो बी आर दुगड़ जैसे विशिष्ट विद्वान पहुंचे है।

4 दिन का आयोजन देश-विदेश से आए विद्वान

4 दिन के इस आयोजन में करीब 250 वैदिक एवं एशियाई चिंतक विचारक, दार्शनिक एवं शोधार्थी मानवकल्याण के निमित्त ज्ञान, बुद्धि और प्रायोगिक पक्ष के विभिन्न आयामों पर अपने विचार एक दूसरे से साझा करेंगे। 12 फरवरी को 91वीं भारतीय दर्शन कांग्रेस का शुभारंभ मशहूर स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी और दार्शनिक प्रो रामजी सिंह करेंगे। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता इलाहाबाद विवि में दर्शनशास्त्र विभाग के प्रमुख रहे प्रो डी एन द्विवेदी करेंगे।

---

www.starsamachar.com
भोपाल, रविवार 12 फरवरी 2017 3

सांची विवि में एशियाई फिलॉसफी कॉन्फ्रेंस का पटवा ने किया शुभारंभ

रायसेन। मप्र में पहली बार आयोजित एशियाई फिलॉसफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में हुआ। मप्र के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री सुरेंद्र पटवा ने कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन करते हुए कहा कि वैदिक एवं बौद्ध परंपराएं एशियाई और विश्व एकता के लिए आदर्श है।

उन्होंने कहा कि मौजूदा दौर में भारतीय दर्शन के तत्वों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। पटवा ने एशियाई फिलॉसॉफिकल कॉन्फ्रेंस से मिलने वाले बिंदुओं को क्रियान्वित कराने में संस्कृति मंत्रालय की मदद का आश्वासन भी दिया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्रीलंकाई महाबोधि सोसायटी के बनागला उपतिस्स नायक थैरो ने कहा कि पश्चिमी दर्शन बहस करने की चीज है, जबकि पूर्वी दर्शन व्यवहार में उतारने की। थैरो ने कहा कि प्रवासी दिवस की शुरुआत सर्वप्रथम सांची से ही हुई थी।

पीपुल्स समाचार | भोपाल, रविवार 12 फरवरी 2017 | 05

सांची विवि में एशियाई कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ

रायसेन। मध्य प्रदेश में पहली बार आयोजित एशियाई फिलासॅफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ शनिवार को सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में हुआ। संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री सुरेंद्र पटवा ने कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन करते हुए कहा कि वैदिक एवं बौद्ध परंपराएं एशियाई और विश्व एकता के लिए आदर्श हैं। मौजूदा दौर में भारतीय दर्शन के तत्वों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है।

पूर्णविराम
2 भोपाल 12 फरवरी 2017
www.purnviram.com

सांची बौद्ध भारतीय अध्ययन विवि में हुआ एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ

मप्र में पहली बार आयोजन, कल होगी इंडियन फिलोसॉफिकल की शुरुआत

संवाददाता ■ रायसेन

मध्य प्रदेश में पहली बार आयोजित एशियाई फिलोसॉफि कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन वि.विद्यालय में हुआ। मप्र के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री सुरेंद्र पटवा ने कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन करते हुए कहा कि वैदिक एवं बौद्ध परंपराएं एशियाई और विश्व एकता के लिए आदर्श है। उन्होंने कहा कि मौजूदा दौर में भारतीय दर्शन के तत्वों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। श्री पटवा ने एशियाई फिलोसॉफि

-कल कॉन्फ्रेंस से मिलने वाले बिंदुओं को क्रियान्वित कराने में संस्कृति मंत्रालय की मदद का आश्वासन भी दिया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्रीलंकाई महाबोधि सोसायटी के बनागला उपतिस्स नायक थैरो ने कहा कि पश्चिमी दर्शन बहस करने की चीज है जबकि पूर्वी दर्शन व्यवहार में उतारने की। श्री थैरो ने कहा कि प्रवासी दिवस की शुरुआत सर्वप्रथम सांची से ही हुई थी और सांची ने ही एशिया को एक नया दर्शन और जीवन व्यवहार दिया। एशियाई फिलोसॉफी कांग्रेस के चेयरमैन प्रो. एस. आर. भट्ट ने उद्घाटन सत्र में कहा कि पश्चिमी दर्शन में बुद्धि पर जोर होता है जबकि पूर्वी दर्शन में बुद्धि के साथ जीवन जीने और जीवनस्तर को ऊंचा उठाने पर खासा ध्यान दिया जाता है। उन्होंने कहा कि भारतीय दर्शन विश्वमानव की अवधारणा पर कार्य करता है जो मौजूदा दौर में और भी ज्यादा प्रासंगिक हो गया है।

रंगकृति
प्रदर्शनकारी कलाओं पर केंद्रित वेबसाइट
Wednesday, 15 February, 2017. 10:56 am

मध्यप्रदेश

सांची बौद्ध-भारतीय अध्ययन विश्वविद्यालय में एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ

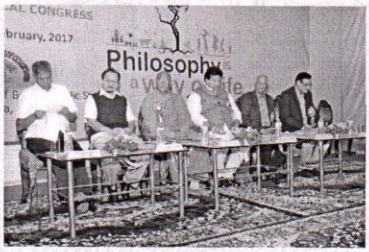

सांची बौद्ध-भारतीय अध्ययन विश्वविद्यालय में एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ

म. प्र. में पहली बार आयोजन, कल होगी इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस की शुरुआत

मध्य प्रदेश में पहली बार आयोजित एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में हुआ। म.प्र. के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री श्री सुरेंद्र पटवा ने कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन करते हुए कहा कि वैदिक एवं बौद्ध परंपराएं एशियाई और विश्व एकता के लिए आदर्श है। उन्होने कहा कि मौजूदा दौर में भारतीय दर्शन के तत्वों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। श्री पटवा ने एशियाई फिलोसॉफिकल कॉन्फ्रेंस से मिलने वाले बिंदुओं को क्रियान्वित कराने में संस्कृति मंत्रालय की मदद का आश्वासन भी दिया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्रीलंकाई महाबोधि सोसायटी के बनागला उपतिस्स नायक थैरो ने कहा कि पश्चिमी दर्शन बहस करने की चीज है जबकि पूर्वी दर्शन व्यवहार में उतारने की। श्री थैरो ने कहा कि प्रवासी दिवस की शुरुआत सर्वप्रथम सांची से ही हुई थी और सांची ने ही एशिया को एक नया दर्शन और जीवन व्यवहार दिया। एशियाई फिलोसॉफी कांग्रेस के चेयरमैन प्रो. एस. आर. भट्ट ने उद्घाटन सत्र में कहा कि पश्चिमी दर्शन में बुद्धि पर ज़ोर होता है जबकि पूर्वी दर्शन में बुद्धि के साथ जीवन जीने और जीवनस्तर को ऊंचा उठाने पर खासा ध्यान दिया जाता है। उन्होने कहा कि भारतीय दर्शन विश्वमानव की अवधारणा पर कार्य करता है जो मौजूदा दौर में और भी ज्यादा प्रासंगिक हो गया है। उद्घाटन वक्तव्य देते हुए सांची विवि के कुलपति आचार्य प्रो. यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि एशियाई कॉन्फ्रेंस के जरिये सांची विवि दर्शन विश्व को अपनी गंभीरता और दर्शन के प्रति निष्ठा बताना चाहता है। उन्होने कहा कि सांची विवि वैदिक एवं बौद्ध दर्शन के सूत्रों को एकीकृत करने, भारतीय दर्शन को मौजूदा परिप्रेक्ष्य में पुनः परिभाषित करने और नए ज्ञान के सृजन के प्रति प्रतिबद्ध है।

एशियाई पहचान के सर्वसम्मत सिद्धांतों को प्रतिपादित करने और अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले दार्शनिकों का एक वैश्विक मंच तैयार करने के उद्देश्य से हो रही एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस के मुख्य सत्र में एशियाई परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण प्रबंधन के माध्यम से शांति कायम रखने में प्रौद्योगिकी की भूमिका पर विचार हुआ। गोलमेज बैठक में बहुसांस्कृतिक समाज में न्याय और समानता की चुनौती के एशियाई समाधान पर बात हुई। इसी दौरान समकालीन एशियाई परिप्रेक्ष्य में स्वास्थ्य की अवधारणा को पुनर्भाषित करने पर भी विचारको-चिंतकों ने बहुमूल्य सुझाव एवं विचार दिए।

एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस में सन मून यूनिवर्सिटी, दक्षिण कोरिया से प्रो. जियो लियांग ली, श्रीलंका के आधिकारिक भाषा आयोग के चेयरमैन प्रो दया इदीरिसिंघे, वियतनाम बुद्धिस्ट यूनिवर्सिटी होची मिन्ह सिटी के प्रो ली मॉन थेट, मियामी विवि अमेरिका के प्रो रामाराव पप्पू, श्रीलंका के परास्नातक पाली एवं बौद्ध संस्थान के निदेशक प्रो सुमनपाला, आचार्य सभा के महासचिव स्वामी परमात्मानंदजी, कनाडा में एशियाई अध्ययन के एमिरेट्स प्रोफेसर अशोक अकलुज़कर, शंघाई विवि चीन की प्रो हयान शेन, शिवानंद आश्रम एमदाबाद के स्वामी अध्यात्मानंदजी, इलाहाबाद विवि के दर्शन विभाग के पूर्व प्रमुख प्रो. जटाशंकर तिवारी, चेन्नई से प्रो. वेंकटचारी चतुर्वेदी स्वामी, कॉलेज ऑफ ऑर्ट एंव साइंस विभाग कनाडा में धार्मिक शिक्षा विभाग के प्रो बृज सिन्हा और जैन विश्व भारती विवि के कुलपति प्रो बी आर दुग्गड़ जैसे विशिष्ट विद्वान पहुंचे है।

4 दिन के इस आयोजन में करीब 250 वैश्विक एवं एशियाई चिंतक-विचारक, दार्शनिक एवं शोधार्थी मानवकल्याण के निमित्त ज्ञान, बुद्धि और प्रायोगिक पक्ष के विभिन्न आयामों पर अपने विचार एक दूसरे से साझा करेंगे। 12 फरवरी को 91वीं भारती दर्शन कॉंग्रेस का शुभारंभ मशहूर स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी और दार्शनिक प्रो रामजी सिंह

नेपथ्य में

By Kaushal Malviya

आज के कार्यक्रम

वैशाली ठक्कर आज शहर में
प्रसिद्ध टीवी व फिल्म कलाकार वैशाली ठक्कर एक टीवी सीरियल प्रमोशन के लिए आज शहर में होंगी। इनके साथ सीरियल के अन्य कलाकार भी मौजूद रहेंगे।

.....

बाग उत्सव
आयोजक : मप्र हस्तशिल्प एवं हथरकघा
स्थान : गौहर महल
समय : दोपहर 12 से प्रारंभ

.....

नाटक का मंचन
आयोजक : नटबुंदेले संस्था
स्थान : शहीद भवन
समय शाम7.00 बजे

.....

नाटक कार्यशाला
आयोजक : विहान नाट्य संस्था
स्थान : आरुषि
समय शाम : 5.30

.....

बंसत मेला
आयोजक : पंचायत एवं ग्रमीण विभाग
स्थान : भोपाल हॉट
समय : दोपहर 02 से रात 08 बजे तक

इंद्रास्त्र पृथ्विजय प्रकाशन

राष्ट्रीय हिन्दी मेल

न दबाव, न भेदभाव

भोपाल, इंदौर, ग्वालियर और रायपुर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष-21 अंक- 109 | भोपाल, रविवार 12 फरवरी 2017 | rashtriyahindimail.com | पृष्ठ-12 मूल्य ₹ 2.00

सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में एशियाई फिलॉसफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ

दर्शनशास्त्र को जानने जुटे देश-विदेश के मेहमान

निज संवाददाता

रायसेन, 11 फरवरी। मध्य प्रदेश में पहली बार आयोजित एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में हुआ। शुभारंभ कार्यक्रम में संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री सुरेंद्र पटवा ने कहा कि वैदिक एवं बौद्ध परंपराएं एशियाई और विश्व एकता के लिए आदर्श हैं।

उन्होंने कहा कि मौजूदा दौर में भारतीय दर्शन के तत्वों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। वहीं कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्रीलंकाई महाबोधि सोसायटी के बनागला उपतिस्स नायक थैरो ने कहा कि पश्चिमी दर्शन बहस करने की चीज है जबकि पूर्वी दर्शन व्यवहार में उतारने की। श्री थैरो ने कहा कि प्रवासी दिवस की शुरुआत सर्वप्रथम सांची से ही हुई थी और सांची ने ही एशिया को एक नया दर्शन और जीवन व्यवहार दिया। एशियाई फिलोसॉफी कांग्रेस के चेयरमैन प्रो. एस. आर भट्ट ने कहा कि पश्चिमी दर्शन में बुद्धि पर ज़ोर होता है जबकि पूर्वी दर्शन में बुद्धि के साथ जीवन जीने और जीवनस्तर को ऊंचा उठाने पर खासा ध्यान दिया जाता है। उन्होने कहा कि भारतीय दर्शन विश्वमानव की अवधारणा पर कार्य करता है जो मौजूदा दौर में और भी ज्यादा प्रासंगिक हो गया है। सांची विवि के कुलपति आचार्य प्रो यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि एशियाई कॉन्फ्रेंस के जरिये सांची विवि दर्शन विश्व को अपनी गंभीरता और दर्शन के प्रति निष्ठा बताना चाहता है। उन्होने कहा कि सांची विवि वैदिक एवं बौद्ध दर्शन के सूत्रों को एकीकृत करने, भारतीय दर्शन को मौजूदा परिप्रेक्ष्य में पुनः परिभाषित करने और नए ज्ञान के सृजन के प्रति प्रतिबद्ध है।

कान्फ्रेंस में विद्वानों का लगा जमघट

एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस में सन मून यूनिवर्सिटी दक्षिण कोरिया से प्रो.जियो लियांग ली श्रीलंका के आधिकारिक भाषा आयोग के चेयरमैन प्रो दया इदीरिसिंघे, वियतनाम बुद्धिस्ट यूनिवर्सिटी होची मिन्ह सिटी के प्रो ली मॉन थेट, मियामी विवि अमेरिका के प्रो रामाराव पप्पू, श्रीलंका के परास्नातक पाली एवं बौद्ध संस्थान के निदेशक प्रो सुमनपाला, आचार्य सभा के महासचिव स्वामी परमात्मानंदजी, कनाडा में एशियाई अध्ययन के एमिरेट्स प्रोफेसर अशोक अकलुज़कर, शंघाई विवि चीन की प्रो हयान शेन, शिवानंद आश्रम एमदाबाद के स्वामी अध्यात्मानंदजी, इलाहाबाद विवि के दर्शन विभाग के पूर्व प्रमुख प्रो. जटाशंकर तिवारी, चेन्नई से प्रो. वेंकटचारी चतुर्वेदी स्वामी,कॉलेज ऑफऑर्ट एंव साइंस विभाग कनाडा में धार्मिक शिक्षा विभाग के प्रो बृज सिन्हा और जैन विश्व भारती विवि के कुलपति प्रो बी आर दुग्गड़ जैसे विशिष्ट विद्वान पहुंचे है।

4 दिन का आयोजन देश-विदेश से आए विद्वान

4 दिन के इस आयोजन में करीब 250 वैश्विक एवं एशियाई चिंतक,विचारक, दार्शनिक एवं शोधार्थी मानवकल्याण के निमित्त ज्ञान, बुद्धि और प्रायोगिक पक्ष के विभिन्न आयामों पर अपने विचार एक दूसरे से साझा करेंगे। 12 फरवरी को 91वीं भारती दर्शन कॉंग्रेस का शुभारंभ मशहूर स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी और दार्शनिक प्रो रामजी सिंह करेंगे। इस कार्यकर्म की अध्यक्षता इलाहाबाद विवि में दर्शनशास्त्र विभाग के प्रमुख रहे प्रो डी एन द्विवेदी करेंगे।

इंद्रप्रस्थ पृथ्विजय प्रकाशन

डाक पंजीयन मप्र/

न दबाव, न भेदभाव

राष्ट्रीय हिन्दी मेल

भोपाल, इंदौर, ग्वालियर और रायपुर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष-21 अंक- 99 भोपाल, गुरुवार 2 फरवरी 2017 rashtriyahindimail.com पृष्ठ-12 मूल्य ₹ 2.00

बसंत पंचमी पर सांची विवि में 'मेडिटेशन वीक' की शुरुआत, 1 से 7 फरवरी तक ध्यान सप्ताह

भोग, रोग और योग में करीबी संबंध, बच्चों के लिए वरदान है ध्यान

रायसेन, 1 फरवरी। बुधवार को सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में ध्यान सप्ताह का शुभारंभ ध्यान के अभ्यास के साथ हुआ। ध्यान की विभिन्न पद्धतियों और प्रणालियों पर काम कर रहे सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के शुभारंभ सत्र के मुख्य अतिथि ओमानंद योग आश्रम के स्वामी ओमानंद सरस्वती ने बताया कि भोग, रोग और योग का बहुत ही करीबी संबंध है। उन्होंने कहा कि ध्यान से हमारी अनंत चेतना जागृत होती है जिससे चित्तवृदधि होती है। उन्होने प्राणायाम को ज्ञान की साधना बताया।

डॉ. भोगल ने दिलाया ध्यान

कैवल्यधाम लोनावाला के प्रो. आर एस भोगल ने ध्यान को छोटे बच्चों के लिए वरदान बताते हुए कहा कि 13 साल से बड़े बच्चों को अनुलोम विलोम ध्यान अवश्य करना चाहिए। प्रो भोगल ने चेताया कि योग और ध्यान अनुभवात्मक नहीं होंगे तो गोरखधंधा बनकर रह जाएंगे। प्रो रामकृष्ण आश्रम, बिठूर कानपुर से आए स्वामी सत्यमयानंद ने उद्घाटन सत्र में कहा कि योग मतलब युक्त होना और एकाग्र होना है। उन्होने कहा कि करीब 79 ध्यान विधियां है जिसमें से करीब 30-32 विधियों को लोकप्रिय बनाया जा सकता है। उनके मुताबिक सजग होकर शून्य जैसी स्थिति में होना ही ध्यान का उन्नत रुप है। उनके अनुसार ध्यान से व्यक्ति का आकर्षण बढ़ जाता है और ध्यान का उपयोग स्वास्थ्य सुरक्षा, सौंदर्य विकास एवं व्याधि निवारण में भी किया जा रहा है।

5 दिनों में हर दिन एक ध्यान विधि

ध्यान सप्ताह में बुधवार को ध्यान के विभिन्न पहलू, ध्यान का दर्शन और विज्ञान के साथ प्रतिभागियों के सवालों का निराकरण किया गया। गुरुवार को शुरुआत ध्यान के सत्र से होगी तथा प्राकृतिक रुप से ध्यान कैसे घटता है, ध्यान के विभिन्न चरण, ध्यान' की बाधाएं और सीमाएं और ध्यान की विभिन्न पद्धतियों की बारीकियों पर बात होगी। साथ ही प्रायोगिक सत्र भी होंगे। इस ध्यान सप्ताह में बाकी 5 दिनों में हर रोज एक ध्यान विधि यथा ट्रांसेंडैंटल योग, विपश्यना, प्रेक्षा ध्यान, क्रिया योग और ब्रह्मकुमारी राजयोग पद्धतियों की बारिकियां और इनका अभ्यास किया जाएगा। खास तौर से किसी 'ध्यान' पद्धति का विकास कब और कैसे हुआ? और संबंधित पद्धति में 'ध्यान' कैसे कार्य करता है पर प्रशिक्षण के साथ चर्चा भी की जाएगी। इस दौरान इस प्रशिक्षण शिविर का उद्देश्य 'ध्यान' के विभिन्न पहलुओं की समझ विकसित करने के साथ उसका प्रायोगिक परीक्षण करना भी है। सांची विश्वविद्यालय के रायसेन स्थित बारला अकादमिक परिसर में सातों दिन प्रशिक्षण सुबह 6 बजे से शुरु होकर शाम 7 बजे तक चलेगा। सांची विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित इस 'ध्यान सप्ताह' से संबंधित अद्यतन खबरें विश्विद्यालय की वेबसाइटपर प्राप्त कर सकते हैं।

गुरुवार, 2 फरवरी 2017

हरिभूमि 13

भोपाल, गुरुवार 2 फरवरी 2017

लाइव

13 साल से बड़े बच्चों के लिए अनुलोम-विलोम आवश्यक

भोपाल। ध्यान की विभिन्न पद्धतियों और प्रणालियों पर काम कर रहे सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में ध्यान सप्ताह का शुभारंभ सुबह ध्यान के अभ्यास के साथ हुआ। शुभारंभ सत्र के मुख्य अतिथि ओमानंद योग आश्रम के स्वामी ओमानंद सरस्वती ने बताया कि भोग, रोग और योग का बहुत ही करीबी संबंध है। उन्होनें कहा कि ध्यान से हमारी अनंत चेतना जागृत होती है जिससे चित्तवद्धि होती है। उन्होनें प्राणायाम को ज्ञान की साधना बताया।

वहीं प्रोफेसर आर एस भोगल ने ध्यान को छोटे बच्चों के लिए वरदान बताते हुए कहा कि 13 साल से बड़े बच्चों को अनुलोम विलोम ध्यान अवश्य करना चाहिए। प्रो भोगल ने चेताया कि योग और ध्यान अनुभवात्मक नहीं होंगे तो गोरखधंधा बनकर रह जाएंगे।

79 ध्यान विधियों में से 30 को ही लोकप्रिय बनाया जा सकता है: प्रो रामकृष्ण आश्रम, बिठूर कानपुर से आए स्वामी सत्यमयानंद ने उद्घाटन सत्र में कहा कि योग मतलब युक्त होना और एकाग्र होना है। सत्यमयानंद कहतें हैं कि करीब 79 ध्यान विधियां है जिसमें से करीब 30-32 विधियों को लोकप्रिय बनाया जा सकता है। उनके मुताबिक सजग होकर शून्य जैसी स्थिति में होना ही ध्यान का उन्नत रुप है। उनके अनुसार ध्यान से व्यक्ति का आकर्षण बढ़ जाता है और ध्यान का उपयोग स्वास्थ्य सुरक्षा, सौंदर्य विकास एवं व्याधि निवारण में भी किया जा रहा है। सांची विवि के कुलसचिव राजेश गुप्ता ने इस मौके पर कहा कि ध्यान देखने और दिखने का फर्क सिखाता है।

जागरण Lake सिटी

दैनिक जागरण
02 फरवरी, 2017

www.jagranmp.com/epaper

बसंत पंचमी पर सांची विवि में 'मेडिटेशन वीक' की शुरुआत

भोग, रोग और योग में करीबी संबंध बच्चों के लिए वरदान है ध्यान

जागरण सिटी रिपोर्टर

ध्यान की विभिन्न पद्धतियों और प्रणालियों पर काम कर रहे सांची बौद्धःभारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में 'ध्यान सप्ताह' का शुभारंभ बुधवार सुबह ध्यान के अभ्यास के साथ हुआ। शुभारंभ सत्र के मुख्य अतिथि ओमानंद योग आश्रम के स्वामी ओमानंद सरस्वती ने बताया कि भोग, रोग और योग का बहुत ही करीबी संबंध है। उन्होंने कहा कि ध्यान से हमारी अनंत चेतना जागृत होती है, जिससे चित्तवृदधि होती है। उन्होंने प्राणायाम को ज्ञान की साधना बताया। कैवल्यधाम लोनावाला के प्रो. आरएस भोगल ने ध्यान को छोटे बच्चों के लिए वरदान बताते हुए कहा कि 13 साल से बड़े बच्चों को अनुलोम विलोम ध्यान अवश्य करना चाहिए। प्रो.भोगल ने चेताया कि योग और ध्यान अनुभवात्मक नहीं होंगे तो गोरखधंधा बनकर रह जाएंगे। प्रो. रामकृष्ण आश्रम बिठूर कानपुर से आए स्वामी सत्यमयानंद ने उद्घाटन सत्र में कहा कि योग मतलब युक्त होना और एकाग्र होना है। उन्होंने कहा कि करीब 79 ध्यान विधियां हैं, जिसमें से करीब 30-32 विधियों को लोकप्रिय बनाया जा सकता है। उनके मुताबिक सजग होकर शून्य जैसी स्थिति में होना ही ध्यान का उन्नत रुप है। उनके अनुसार ध्यान से व्यक्ति का आकर्षण बढ़ जाता है और ध्यान का उपयोग स्वास्थ्य सुरक्षा, सौंदर्य विकास एवं व्याधि निवारण में भी किया जा रहा है। सांची विवि के कुलसचिव राजेश गुप्ता ने इस मौके पर कहा कि ध्यान देखने और दिखने का फर्क सिखाता है। उनके अनुसार ध्यान का घटना मन की मृत्यु है और भाषा मन की अर्धांगिनी है।

सेमिनार में चर्चा

सांची विश्वविद्यालय में ध्यान सप्ताह शुरू, सिखाई जाएंगी ध्यान की विधियां

13 साल से बड़े बच्चों के लिए ध्यान साधना जरूरी

भोपाल

सांची विवि में बुधवार से शुरू हुए 'ध्यान सप्ताह' में ध्यान के विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई। कार्यक्रम की शुरुआत सुबह ध्यान शिविर के साथ हुई। इसके बाद विशेषज्ञों ने ध्यान के पक्षों पर विचार रखे। प्रो. रामकृष्ण आश्रम, कानपुर बिठूर से आए स्वामी सत्यमयानंद ने कहा कि कहा कि योग मतलब युक्त और एकाग्र होना है। उन्होंने कहा कि करीब 79 ध्यान विधियां हैं, जिसमें से करीब 30-32 को लोकप्रिय बनाया जा सकता है। उनके मुताबिक सजग होकर शून्य जैसी स्थिति में होना ही ध्यान का उन्नत रूप है। ध्यान से व्यक्ति का आकर्षण बढ़ जाता है और ध्यान का उपयोग स्वास्थ्य सुरक्षा, सौंदर्य विकास व व्याधि निवारण में भी किया जा रहा है।

ध्यान से व्यक्तित्व में बढ़ता है आकर्षण

कैवल्यधाम लोनावाला के प्रो. आरएस भोगल ने ध्यान को छोटे बच्चों के लिए वरदान बताते हुए कहा कि 13 साल से बड़े बच्चों को अनुलोम- विलोम अवश्य करना चाहिए। वहीं मुख्य अतिथि ओमानंद योग आश्रम के स्वामी ओमानंद सरस्वती ने बताया कि भोग, रोग और योग का बहुत ही करीबी संबंध है। उन्होंने कहा कि ध्यान से हमारी अनंत चेतना जागृत होती है जिससे चित्तवृद्धि होती है।

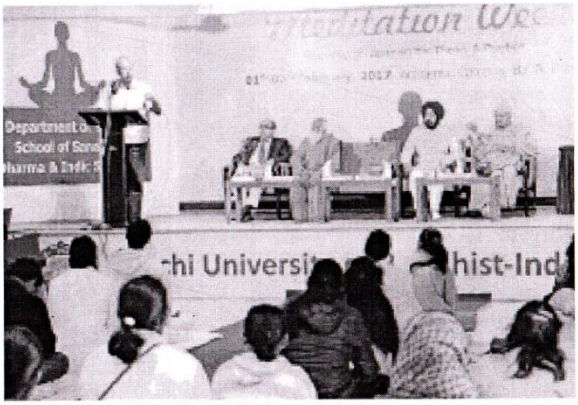

सांची विवि में शुरू हुए सेमिनार में ध्यान के विषयों पर चर्चा की गई।

व्यक्ति में निरपेक्ष भाव जगाता है ध्यान

सांची विवि के कुलसचिव राजेश गुप्ता ने कहा कि ध्यान देखने और दिखने का फर्क सिखाता है। उनके अनुसार ध्यान का घटना मन की मृत्यु है और भाषा मन की अर्धांगिनी है। इस प्रकार ध्यान में व्यक्ति निरपेक्ष भाव से चीजों को उनके वास्तविक स्वरूप में देखने का भाव विकसित करता है। उन्होंने बताया इस ध्यान सप्ताह में बाकी 5 दिनों में हर रोज एक ध्यान विधि, ट्रांसेंडैंटल योग, विपश्यना, प्रेक्षा ध्यान, क्रिया योग और ब्रह्मकुमारी राजयोग पद्धतियों की बारिकियां और इनका अभ्यास किया जाएगा। प्रशिक्षण सुबह 6 बजे से शुरू होकर शाम 7 बजे तक चलेगा।

दबंग दुनिया
भोपाल,गुरुवार, 2 फरवरी 2017
भोपाल 05

सांची विवि में मेडिटेशन वीक की शुरूआत

भोपाल। ध्यान की विभिन्न पद्धतियों और प्रणालियों पर काम कर रहे सांची बौद्ध,भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में ध्यान सप्ताह का शुभारंभ सुबह ध्यान के अभ्यास के साथ हुआ। शुभारंभ सत्र के मुख्य अतिथि ओमानंद योग आश्रम के स्वामी ओमानंद सरस्वती ने बताया कि भोग, रोग और योग का बहुत ही करीबी संबंध है। उन्होंने कहा कि ध्यान से हमारी अनंत चेतना जागृत होती है जिससे चित्तवृद्धि होती है। उन्होंने प्राणायाम को ज्ञान की साधना बताया। कैवल्यधाम लोनावाला के प्रो आरएस भोगल ने ध्यान को छोटे बच्चों के लिए वरदान बताते हुए कहा कि 13 साल से बड़े बच्चों को अनुलोम विलोम ध्यान अवश्य करना चाहिए। प्रो रामकृष्ण आश्रमए बिठूर कानपुर से आए स्वामी सत्यमयानंद ने कहा कि योग मतलब युक्त होना और एकाग्र होना है। सांची विवि के कुलसचिव राजेश गुप्ता ने कहा कि ध्यान देखने और दिखने का फर्क सिखाता है। ध्यान सप्ताह में बुधवार को ध्यान के विभिन्न पहलूए ध्यान का दर्शन और विज्ञान के साथ प्रतिभागियों के सवालों का निराकरण किया गया। गुरुवार को शुरूआत ध्यान के सत्र से होगी तथा प्राकृतिक रुप से ध्यान कैसे घटता है, ध्यान के विभिन्न चरण, ध्यान की बाधाएं और सीमाएं और ध्यान की विभिन्न पद्धतियों की बारीकियों पर बात होगी। साथ ही प्रायोगिक सत्र भी होंगे। सांची विश्वविद्यालय के रायसेन स्थित बारला अकादमिक परिसर में सातों दिन प्रशिक्षण सुबह 6 बजे से शुरू होकर शाम 7 बजे तक चलेगा।

---

cityभास्कर एक्टिविटी BHOPAL, THURSDAY, 02/02/2017 16

वसंत पंचमी पर सांची विवि में हुई 'मेडिटेशन वीक' की शुरुआत

स्कूल में पढ़ने वालों के लिए वरदान से कम नहीं है ध्यान

• ध्यान सप्ताह की शुरूआत में योग और ध्यान से जुड़ी महत्वपूर्ण बातें बताते विषय विशेषज्ञ।

सिटी रिपोर्टर • ध्यान की विभिन्न पद्धतियों और प्रणालियों पर काम कर रहे सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में 'ध्यान सप्ताह' का शुभारंभ ध्यान के अभ्यास के साथ हुआ। शुभारंभ सत्र के मुख्य अतिथि ओमानंद योग आश्रम के स्वामी ओमानंद सरस्वती ने बताया कि भोग, रोग और योग का बहुत ही करीबी संबंध है। उन्होने प्राणायाम को ज्ञान की साधना बताया। कैवल्यधाम लोनावाला के प्रो. आर एस भोगल ने ध्यान को छोटे बच्चों के लिए वरदान बताते हुए कहा कि 13 साल से बड़े बच्चों को अनुलोम विलोम, ध्यान अवश्य करना चाहिए। योग और ध्यान अनुभवात्मक नहीं होंगे तो गोरखधंधा बनकर रह जाएंगे। प्रो. रामकृष्ण आश्रम, बिठूर कानपुर से आए स्वामी सत्यमयानंद ने कहा कि योग मतलब युक्त होना और एकाग्र होना है। करीब 79 ध्यान विधियां हैं, जिसमें से करीब 30-32 विधियों को लोकप्रिय बनाया जा सकता है। सांची विवि के कुलसचिव राजेश गुप्ता ने बताया कि ध्यान देखने और दिखने का फर्क सिखाता है। ध्यान सप्ताह में ध्यान के विभिन्न पहलू, दर्शन और विज्ञान के साथ प्रतिभागियों के सवालों का निराकरण किया गया।

---

2 भोपाल 02 फरवरी 2017
www.purnviram.com

राजधानी आस-पास

सांची विवि में 1 से 7 तक 'ध्यान सप्ताह'

भोग, रोग और योग में करीबी संबंध बच्चों के लिए वरदान है, ध्यान

रायसेन। ध्यान की विभिन्न पद्धतियों और प्रणालियों पर काम कर रहे सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में 'ध्यान सप्ताह' का शुभारंभ ध्यान के अभ्यास के साथ हुआ। शुभारंभ सत्र के मुख्य अतिथि ओमानंद योग आश्रम के स्वामी ओमानंद सरस्वती ने बताया कि भोग, रोग और योग का बहुत ही करीबी संबंध है। उन्होंने कहा कि ध्यान से हमारी अनंत चेतना जागृत होती है जिससे चित्तवृद्धि होती है। उन्होने प्राणायाम को ज्ञान की साधना बताया। कैवल्यधाम लोनावाला के प्रो. आर एस भोगल ने ध्यान को छोटे बच्चों के लिए वरदान बताते हुए कहा कि 13 साल से बड़े बच्चों को अनुलोम विलोम ध्यान अवश्य करना चाहिए।

रंगकृति
प्रदर्शनकारी कलाओं पर केंद्रित वेबसाइट
Wednesday, 01 February, 2017. 05:48 pm

योग

बसंत पंचमी पर सांची विवि में 'मेडिटेशन वीक' की शुरुआत

भोग, रोग और योग में करीबी संबंध, बच्चों के लिए वरदान है ध्यान

ध्यान की विभिन्न पद्धतियों और प्रणालियों पर काम कर रहे सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में 'ध्यान सप्ताह' का शुभारंभ सुबह ध्यान के अभ्यास के साथ हुआ। शुभारंभ सत्र के मुख्य अतिथि ओमानंद योग आश्रम के स्वामी ओमानंद सरस्वती ने बताया कि भोग, रोग और योग का बहुत ही करीबी संबंध है। उन्होने कहा कि ध्यान से हमारी अनंत चेतना जागृत होती है जिससे चित्तवृदधि होती है। उन्होने प्राणायाम को ज्ञान की साधना बताया। कैवल्यधाम लोनावाला के प्रो. आर एस भोगल ने ध्यान को छोटे बच्चों के लिए वरदान बताते हुए कहा कि 13 साल से बड़े बच्चों को अनुलोम विलोम ध्यान अवश्य करना चाहिए।

प्रो भोगल ने चेताया कि योग और ध्यान अनुभवात्मक नहीं होंगे तो गोरखधंधा बनकर रह जाएंगे। प्रो रामकृष्ण आश्रम, बिठूर कानपुर से आए स्वामी सत्यमयानंद ने उद्घाटन सत्र में कहा कि योग मतलब युक्त होना और एकाग्र होना है। उन्होने कहा कि करीब 79 ध्यान विधियां है जिसमें से करीब 30-32 विधियों को लोकप्रिय बनाया जा सकता है।

उनके मुताबिक सजग होकर शून्य जैसी स्थिति में होना ही ध्यान का उन्नत रुप है। उनके अनुसार ध्यान से व्यक्ति का आकर्षण बढ़ जाता है और ध्यान का उपयोग स्वास्थ्य सुरक्षा, सौंदर्य विकास एवं व्याधि निवारण में भी किया जा रहा है। सांची विवि के कुलसचिव श्री राजेश गुप्ता ने इस मौके पर कहा कि ध्यान देखने और दिखने का फर्क सिखाता है। उनके अनुसार ध्यान का घटना मन की मृत्यु है और भाषा मन की अर्धांगिनी है। इस प्रकार ध्यान में व्यक्ति निरपेक्ष भाव से चीजों को उनके वास्तविक स्वरुप में देखने का भाव विकसित करता है।

ध्यान सप्ताह में बुधवार को ध्यान के विभिन्न पहलू, ध्यान का दर्शन और विज्ञान के साथ प्रतिभागियों के सवालों का निराकरण किया गया। गुरुवार को शुरुआत ध्यान के सत्र से होगी तथा प्राकृतिक रुप से ध्यान कैसे घटता है, ध्यान के विभिन्न चरण, ध्यान की बाधाएं और सीमाएं? और ध्यान की विभिन्न पद्धतियों की बारीकियों पर बात होगी। साथ ही प्रायोगिक सत्र भी होंगे।

इस ध्यान सप्ताह में बाकी 5 दिनों में हर रोज एक ध्यान विधि यथा ट्रांसेंडैंटल योग, विपश्यना, प्रेक्षा ध्यान, क्रिया योग और ब्रह्मकुमारी राजयोग पद्धतियों की बारिकियां और इनका अभ्यास किया जाएगा। खास तौर से किसी 'ध्यान' पद्धति का विकास कब और कैसे हुआ? और संबंधित पद्धति में 'ध्यान' कैसे कार्य करता है पर प्रशिक्षण के साथ चर्चा भी की जाएगी।

नेपथ्य में

आज के कार्यक्रम

गुजरात उत्सव
आयोजक : संगीत केन्द्र अनहद
स्थान : भारत भवन
समय : शाम 6 बजे

.....

नाटक कार्यशाला
आयोजक : चिल्ड्रंस अकादमी अर्ध्य
स्थान : गांधी भवन
समय शाम 5.30 बजे

.....

वार्षिकोत्सव
आयोजक : जॉन बोस्को पब्लिक स्कूल
स्थान : रवीन्द्र भवन

iam BHOPAL
पीपुल्स समाचार

रोग व योग का बहुत करीबी संबंध है: स्वामी ओमानंद

कार्यक्रम के दौरान अपना वक्तव्य देते योग गुरू।

सांची विवि में आयोजित 'ध्यान सप्ताह'

यंग रिपोर्टर ● भोपाल
editor@peoplessamachar.co.in

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में 'ध्यान सप्ताह' का बुधवार से शुरू हुआ। शुभारंभ सत्र के मुख्य अतिथि ओमानंद योग आश्रम के स्वामी ओमानंदसरस्वतीने बतायाकि भोग, रोग और योग का बहुत ही करीबी संबंध है। उन्होंने कहा कि ध्यान से हमारी अनंत चेतना जागृत होती है जिससे चित्तवृदधि होती है और प्राणायामको ज्ञानकी साधनाबताया।

कैवल्यधाम लोनावाला के प्रो. आरएस भोगल ने ध्यान को छोटे बच्चोंके लिएवरदानबतातेहुएकहा कि 13 साल से बड़े बच्चों को अनुलोमविलोम ध्यान अवश्य करना चाहिए। प्रो. रामकृष्ण आश्रम, बिठूर कानपुर से आएस्वामीसत्यमयानंदने कहा कि योग मतलब युक्त होना और एकाग्र होना है। उन्होंने कहा कि करीब 79 ध्यानविधियां है, जिसमें से करीब 30-32 विधियों को लोकप्रिय बनाया जा सकता है। उनके मुताबिक सजग होकर शून्य जैसी स्थिति में होनाही ध्यानका उन्नत रुपहै। उनके अनुसार ध्यान से व्यक्ति का आकर्षण बढ़ जाता है और ध्यान का उपयोग स्वास्थ्य सुरक्षा, सौंदर्य विकास एवं व्याधि निवारण में भी किया जा रहा है।

सांची विवि के कुलसचिव राजेश गुप्ता ने कहा ध्यान देखने और दिखने का फर्क सिखाता है। उनके अनुसार ध्यान का घटना मन की मृत्यु है और भाषा मनकी अर्धांगिनीहै।इस मौके पर कार्यक्रम में सांची विवि के कुलसचिव राजेश गुप्ता के साथ काफी संख्या में लोगों मौजूद रहें।

भोजपाल
स्वदेश भोपाल, 2 फरवरी 2017 . 3

बच्चों के लिए वरदान है ध्यान

« स्वदेश संवाददाता। भोपाल

» सांची विवि में 'मेडिटेशन वीक' की शुरुआत

ध्यान की विभिन्न पद्धतियों और प्रणालियों पर काम कर रहे सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में 'ध्यान सप्ताह' का शुभारंभ सुबह ध्यान के अभ्यास के साथ हुआ। शुभारंभ सत्र के मुख्य अतिथि ओमानंद योग आश्रम के स्वामी ओमानंद सरस्वती ने बताया कि भोग, रोग और योग का बहुत ही करीबी संबंध है। उन्होने कहा कि ध्यान से हमारी अनंत चेतना जागृत होती है जिससे चित्तवृदधि होती है। उन्होने प्राणायाम को ज्ञान की साधना बताया। कैवल्यधाम लोनावाला के प्रो. आर एस भोगल ने ध्यान को छोटे बच्चों के लिए वरदान बताते हुए कहा कि 13 साल से बड़े बच्चों को अनुलोम विलोम ध्यान अवश्य करना चाहिए। प्रो भोगल ने चेताया कि योग और ध्यान अनुभवात्मक नहीं होंगे तो गोरखधंधा बनकर रह जाएंगे। प्रो रामकृष्ण आश्रम, बिठूर क्रानपुर से आए स्वामी सत्यमयानंद ने उद्घाटन सत्र में कहा कि योग मतलब युक्त होना और एकाग्र होना है। उन्होने कहा कि करीब 79 ध्यान विधियां है जिसमें से करीब 30-32 विधियों को लोकप्रिय बनाया जा सकता है। उनके मुताबिक सजग होकर शून्य जैसी स्थिति में होना ही ध्यान का उन्नत रुप है। उनके अनुसार ध्यान से व्यक्ति का आकर्षण बढ़ जाता है और ध्यान का उपयोग स्वास्थ्य सुरक्षा, सौंदर्य विकास एवं व्याधि निवारण में भी किया जा रहा है। सांची विवि के कुलसचिव राजेश गुप्ता ने इस मौके पर कहा कि ध्यान देखने और दिखने का फर्क सिखाता है। उनके अनुसार ध्यान का घटना मन की मृत्यु है और भाषा मन की अर्धांगिनी है। इस प्रकार ध्यान में व्यक्ति निरपेक्ष भाव से चीजों को उनके वास्तविक स्वरुप में देखने का भाव विकसित करता है।

शंकाओं का समाधान

ध्यान सप्ताह में बुधवार को ध्यान के विभिन्न पहलू, ध्यान का दर्शन और विज्ञान के साथ प्रतिभागियों के सवालों का निराकरण किया गया। गुरुवार को शुरुआत ध्यान के सत्र से होगी तथा प्राकृतिक रुप से ध्यान कैसे घटता है, ध्यान के विभिन्न चरण, ध्यान' की बाधाएं और सीमाएं? और ध्यान की विभिन्न पद्धतियों की बारीकियों पर बात होंगी। साथ ही प्रायोगिक सत्र भी होंगे। इस ध्यान सप्ताह में बाकी 5 दिनों में हर रोज एक ध्यान विधि यथा ट्रांसेंडैंटल योग, विपश्यना, प्रेक्षा ध्यान, क्रिया योग और ब्रह्मकुमारी राजयोग पद्धतियों की बारिकियां और इनका अभ्यास किया जाएगा। खास तौर से किसी 'ध्यान' पद्धति का विकास कब और कैसे हुआ? और संबंधित पद्धति में 'ध्यान' कैसे कार्य करता है पर प्रशिक्षण के साथ चर्चा भी की जाएगी। इस प्रशिक्षण शिविर का उद्देश्य 'ध्यान' के विभिन्न पहलुओं की समझ विकसित करने के साथ उसका प्रायोगिक परीक्षण करना भी है। सांची विश्वविद्यालय के रायसेन स्थित बारला अकादमिक परिसर में सातों दिन प्रशिक्षण सुबह 6 बजे से शुरु होकर शाम 7 बजे तक चलेगा।

रंगकृति
प्रदर्शनकारी कलाओं पर केंद्रित वेबसाइट
Friday, 03 February, 2017. 11:48 am

योग

'मेडिटेशन वीक' के दूसरे दिन ध्यान के चरण और सीमाओं पर हुई बात

सांची विवि में विभिन्न ध्यान पद्धतियों की विवेचना और अभ्यास, प्राकृतिक रुप से कैसे घटता है ध्यान

ध्यान चेतना के संवर्धन का ऐसा अनूठा प्रयोग है जो पूरी दुनिया में आकर्षण का विषय बना हुआ है। सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में जारी ध्यान सप्ताह में ध्यान के समस्त आयामों पर देश के उत्कृष्ट विद्वानों द्वारा उद्बोधन एवं प्रायोगिक परीक्षण किया जा रहा है। ध्यान सप्ताह के दूसरे दिन ध्यान क्या है? उसके दर्शन, ध्यान का नैसर्गिक स्वरूप और विभिन्न मार्गों एवं अनुभवों पर चर्चा हुई।

दूसरे दिन का मुख्य विषय "प्राकृतिक रूप से ध्यान का प्रादुर्भाव" रहा।

प्रातकालीन ध्यान साधना के उपरांत प्रथम सत्र में पंचकोशी साधना के विद्वान श्री लाल बिहारी सिंह ने कहा कि ध्यान की अपनी विचार प्रणाली और विज्ञान है। उनके मुताबिक इस विज्ञान को जान लेने से प्रकृति से एकाकार विकसित होता है और कर्म बंधन टूटने लगता है। राम कृष्ण मठ के सन्यासी स्वामी सत्यमयानंद जी ने बताया कि ध्यान से उत्पन्न उर्जा ओज के साथ मिलकर मस्तिष्क को शीतल और जीवन को आनन्दमय बनाती है।

स्वामी विवेकानंद अनुसंधान संस्थान बैंगलूरु की डॉ. नागरत्ना ने ध्यान के वैज्ञानिक पक्ष को विस्तारित किया। उन्होने अत्याधुनिक मशीनों यथा एफ-एम.आर.आई द्वारा खींचे गये मस्तिष्किय चित्रों में ध्यान के फलस्वरुप आये बदलावों और प्रभावों की चर्चा की। दूसरे दिन का समापन प्रतिभागियों की जिज्ञासा समाधान के साथ हुआ।

ध्यान सप्ताह के बाकी बचे 5 दिनों में रोज़ाना एक ध्यान विधि यथा ट्रांसेंडैंटल योग, विपश्यना, प्रेक्षा ध्यान, क्रिया योग और ब्रह्मकुमारी राजयोग पद्धतियों की बारिकियां और इनका अभ्यास किया जाएगा। इस दौरान खास तौर पर किसी 'ध्यान' पद्धति का विकास कब और कैसे हुआ? और संबंधित पद्धति में 'ध्यान' कैसे कार्य करता है पर प्रशिक्षण के साथ चर्चा की जाएगी। इस ध्यान सप्ताह में देशभर के 70 प्रतिभागियों के साथ ध्यान की विभिन्न पद्धतियों के 20 विद्वान शिरकत कर रहे हैं।

सांची विवि में प्रेक्षा ध्यान विधि का अभ्यास

'विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय है प्रेक्षा ध्यान'

सिटी रिपोर्टर • सांची बौद्ध- भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आयोजित ध्यान सप्ताह में सोमवार को प्रेक्षा ध्यान पद्धति की जानकारी, अभ्यास और कार्य प्रणाली समझाई गई। जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय लाड़नूं, राजस्थान से आईं

जैन विभाग की प्रमुख श्रमणी चैतन्य प्रज्ञा ने कहा कि हमारा ज्ञान जानकारी के स्तर तक सीमित है, जिससे उसका कर्म से समन्वय नहीं हो पाता। प्रेक्षा ध्यान के अभ्यास से आत्मा का अनुभव होने पर पुस्तकीय ज्ञान की आवश्यकता समाप्त हो जाती है। ध्यान शोधन या सफाई की प्रक्रिया है और इसके सहारे हम मन, वाणी और कर्म की शुचिता प्राप्त कर सकते हैं। उनके मुताबिक कर्म ही चेतना की मुक्ति का सबसे बड़ा बंधन है और ध्यान के अभ्यास से इन कर्मों को नष्ट किया जा सकता है। श्रमणी हिम प्रज्ञा ने प्रेक्षा ध्यान के प्रायोगिक पक्ष को उजागर करते हुए विभिन्न चरणों का अभ्यास कराया, जिसमें कायोत्सर्ग, अनुप्रेक्षा, ज्योतिकेंद्र आदि सम्मिलित थे। मंगलवार को राजयोग ध्यान पद्धति की बारिकियां और अभ्यास कराया जाएगा। इस ध्यान सप्ताह में देशभर के 70 प्रतिभागियों के साथ ध्यान की विभिन्न पद्धतियों के 20 विद्वान शिरकत कर रहे हैं।